(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 52, अंक 11, मई, 2017
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

शान्तिवन (आबू रोड)- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में भारत के प्रधानमन्त्री भ्राता नरेन्द्र मोदी, वीडियो कान्फ्रेन्स के माध्यम से ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय के डायमण्ड हॉल में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए। विभिन्न क्षेत्रों से पधारे गणमान्यजन भी मंच पर उपस्थित हैं।

1

2

3

4

5

6

7

8

1.शान्तिवन (आबू रोड)- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भ्राता एल.के.आडवाणी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, राज्यसभा के उपसभापति भ्राता पी.जे.कुरियन, ब्र.कु.निर्वैर भाई, ब्र.कु.बृजमोहन भाई तथा अन्य। **2.शान्तिवन (आबू रोड)**- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में सम्बोधित करते हुए गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता ओ.पी.कोहली जी। मंचासीन हैं ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.रानी बहन। **3.शान्तिवन (आबू रोड)**- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में सम्बोधित करते हुए आसाम के राज्यपाल महामहिम भ्राता बनवारीलाल पुरोहित। **4.शान्तिवन (आबू रोड)**- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में 'प्रेरणा' पुस्तक के विमोचन के बाद पुडुचेरी की राज्यपाल महामहिम बहन किरण बेदी, ब्र.कु.सन्तोष बहन, ब्र.कु.निर्वैर भाई तथा अन्य समूह चित्र में। **5.शान्तिवन (आबू रोड)**- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में सम्बोधित करते हुए भारत में नेपाल के राजदूत भ्राता दीपकुमार उपाध्याय। **6.शान्तिवन (आबू रोड)**- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय लघु, सूक्ष्म एवं मध्यम उद्योग मंत्री भ्राता कलराज मिश्र। **7.शान्तिवन (आबू रोड)**- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में सम्बोधित करते हुए राज्यसभा के उपसभापति भ्राता पी.जे.कुरियन। **8.शान्तिवन (आबू रोड)**- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में सम्बोधित करते हुए राजस्थान पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक भ्राता गुलाब कोठारी।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का विस्तृत समाचार

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की 80वीं वर्षगांठ देश-विदेश की कई सुप्रसिद्ध हस्तियों की मौजूदगी में भव्य अंदाज में मनाई गई। संगठन के शान्तिवन परिसर में भव्य सजावट की गई। सारा माहौल आध्यात्मिकता की खुशबू से महकता रहा। इस अवसर पर **'विश्व परिवर्तन के लिए परमात्म ज्ञान'** विषय पर आयोजित किए गए अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मलेन का उद्‌घाटन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 26 मार्च शाम 6 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से किया। चार दिन में विभिन्न सत्रों में चलने वाले सम्मेलन में आध्यात्मिकता से स्वपरिवर्तन; विज्ञान व अध्यात्म के समन्वय से खुशहाल जीवन जीने की कला; आध्यात्मिक नेतृत्व द्वारा सामाजिक ढांचे का परिवर्तन; विश्व परिवर्तन में परमात्मा की भूमिका; राजयोग से आंतरिक मूल्यों की जागृति; मूल्यनिष्ठ मीडिया; निष्पक्ष न्यायकारिता; महिला व युवा शक्ति द्वारा समाज को नई दिशा आदि विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई।

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा, ''मेरा यह सौभाग्य रहा कि मुझे कई बार आप लोगों के बीच आने का अवसर मिला है और आप सबका मेरे ऊपर स्नेह रहा है। किसी भी संस्था के लिए 80 साल का समय कम नहीं होता है। आज जो विश्व की स्थिति है और मानव का जो स्वभाव बनता जा रहा है उसमें किसी भी संगठन में 10 या 15 साल बाद बिखराव शुरू हो जाता है, ग्रुप बन जाते हैं और एक से 10 संस्थायें पैदा हो जाती हैं। दादा लेखराज जी की कमाल रही कि 80 साल के बाद भी जिन आदर्शों और मूल्यों को लेकर नारी शक्ति को आगे रख कर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को चलाया गया वह आज भी उतने ही मनोयोग से, उतनी ही कर्मठता और एकजुटता के साथ विश्व भर में अपना संदेश दे रहा है। ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारियाँ भारत के अध्यात्म को विश्व में पहुँचा रहे हैं। आप सब बधाई के पात्र हैं और मैं आप सब का अभिनंदन करता हूँ। मैंने आपके कार्य को बड़े नजदीक से देखा है, आपके चिंतन को समझने का मैंने प्रयास भी किया है और एक अच्छा सानिध्य भी मुझे आप लोगों का मिला है।

मैंने देखा कि टॉर्च जलाकर आपने प्रकाश बनाने का कार्य किया। आप सबने अभी प्रकाश के माध्यम से अभिवादन किया। (आगे..पृष्ठ 7 पर)

अमृत-सूची

- स्वामी बनें..*(संपादकीय)* 4
- श्रद्धांजलि 26
- ओमशान्ति के अर्थ.(कविता) .26
- 'पत्र' संपादक के नाम.........26
- सचित्र सेवा समाचार 27
- व्यसनों के कारण 28
- सचित्र सेवा समाचार 30
- ईश्वरीय ज्ञान के लिए 32

सदस्यता शुल्क

	भारत	विदेश
वार्षिक	100 /-	1,000/-
आजीवन	2,000 /-	10,000/-

शुल्क **'ज्ञानामृत'** के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।**

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
Website : gyanamrit.bkinfo.in

खुशखबरी

ज्ञानामृत पत्रिका के पुराने अंकों का अध्ययन करने के इच्छुक भाई-बहनों के लिए खुशखबरी है कि gyanamrit.bkinfo.in लिंक से जनवरी, 1980 से दिसम्बर, 1988 तक की पत्रिकाएँ नेट पर उपलब्ध हैं। इससे आगे के अंक भी धीरे-धीरे उपलब्ध किए जाते रहेंगे।

सम्पादकीय ..

स्वामी बनें, दास नहीं

आज के संसार में अधिकतर मानव अपनी ही इन्द्रियों की अधीनता में जी रहे हैं। अधीनता कभी सुख नहीं दे सकती। इसलिए इन्द्रिय सुखों की भरमार होते भी रोग, शोक, कष्ट बढ़ते जा रहे हैं। जब व्यक्ति किसी भी इन्द्रिय के विषय पर आकर्षित हो जाता है तो उसका तब तक पीछा करता है जब तक कि वह मिल नहीं जाता। ना मिले तो परेशान होता है और मिल जाए तो भी उसे छोड़ उसका आकर्षण अन्य विषय की तरफ दौड़ने लगता है। इस प्रकार दौड़ने-भागने की प्रक्रिया बेअन्त चलती रहती है। यदि कोई वस्तु देखने में सुन्दर लगती है तो बार-बार उसे देखने की ललक लग जाती है, सुनने में मधुर है तो हम खड़े हो सुनने लगते हैं। गंध प्रिय लगती है तो सब कुछ भूल उस ओर खिंचे चले जाते हैं। स्वाद के लिए भी हम इसी प्रकार लालायित होते हैं। कई बार तो हम इन्द्रियों के इन विषयों के प्रति इतने आतुर और व्यग्र हो जाते हैं कि मर्यादाओं की सीमाएँ तोड़ देते हैं और सद्‌गुणों को भी त्याग देते हैं। इन्द्रियों के विषयों को पाने और भोगने से आसक्ति तृप्त कभी नहीं होती बल्कि अधिक भड़कती है क्योंकि इन्द्रियों की बनावट या प्रकृति ऐसी है कि उनमें तृप्ति का अहसास नहीं है। वे भोगते-भोगते जीर्ण भले हो जाएँ पर उनके भोगने की प्रवृत्ति में कोई कमी नहीं आ सकती। भोग उनकी भोगने की अग्नि को भड़काते हैं जिसमें मानव की आत्मा की स्वतन्त्रता जलकर भस्म हो जाती है। वह दास बनकर भोगों के पीछे भटकता है और उदासी को गले लगाता है। यही कारण है कि आज के संसार में भोगों की भरमार है पर तृप्त और सन्तुष्ट कोई दिखाई नहीं देता। अब एक बड़ा सवाल यह है कि मानव की इन्द्रियाँ भी रहें पर वह उनके आतंक या उनकी अधीनता से मुक्त रह कर उनका स्वामी बन जाए, ऐसा कैसे हो?

इन्द्रियजीत से पहले बनना है मनजीत

हम सबने सपेरों को देखा है जो सर्पों को टोकरी में लिए-लिए घूमते हैं और बीन बजा-बजाकर उन्हें हानिरहित बना लेते हैं। जन्मजात प्राप्त मानव की इन्द्रियाँ भी सर्प की तरह ही हैं जिनमें इच्छा, तृष्णा, आसक्ति का ज़हर भरा है। सर्प का ज़हर निकल जाने से वह हानिरहित हो जाता है और मनोरंजन का साधन बन जाता है, इसी प्रकार इन्द्रियाँ भी इनके भीतर की तृष्णा, आसक्ति निकल जाने से साधक की सेवक बन जाती हैं और साधना में पूर्ण सहयोगी बनकर, पतन की बजाए उत्थान की ओर ले चलती हैं। इन्द्रियाँ स्वयं दोषी नहीं हैं। इनको उकसाने वाला है चंचल मन। मन तो एक है परन्तु इन्द्रियाँ तो कई हैं। जैसे कठपुतलियों के संचालक एक व्यक्ति के हाथ में मुख्य धागा होता है और उस धागे से आगे कई कठपुतलियाँ गतिमान रहती हैं इसी प्रकार मन तो एक है परन्तु मन के सूक्ष्म विचार ही वे धागे हैं जो समस्त इन्द्रियों को चलायमान करते हैं। अत: इन्द्रियों को जीतने से पहले मन को जीतना है अर्थात् मन को वश में करना है। इन्द्रियजीत से पहले मन-जीत बनना है।

अमूल्य चीजें रखी जाती हैं गुप्त

कहा गया है, मन जीते जगतजीत। मन आत्मा की एक शक्ति है और आत्मा शरीर को चलाने वाली चेतन शक्ति है। जैसे गाय को वश में कर लेने पर बछड़ा पीछे-पीछे आ जाता है, उसी प्रकार आत्मा को जान लेने के बाद मन स्वत: वश में आ जाता है। आत्मा शब्द से हम सभी भिज्ञ हैं पर यह कैसी है, कहाँ रहती है, कहाँ से आती है, क्या करती है, इन बातों से भिज्ञ होना भी अनिवार्य है। आत्मा गुप्त है और शरीर प्रत्यक्ष है। अमूल्य चीजें हमेशा गुप्त रखी जाती हैं। संसार में हीरा सबसे मूल्यवान माना जाता है, तो

क्या हम उसे हाथ में लिए घूमते रहते हैं? नहीं। अमूल्य हीरे को मखमल में लपेटकर, सुन्दर और कीमती डिब्बी में बन्द करके किसी बॉक्स में रखते हैं। उस बॉक्स को गोदरेज की अलमारी में रखकर ताला लगा देते हैं। यह अलमारी किसी कमरे के भीतर होती है। हम उस कमरे को और वह कमरा जिस मकान में है उसे भी ताला लगा देते हैं। अब देखिए, हीरे तक पहुँचने के लिए कितने द्वार पास करने पड़ेंगे? पहले मकान, फिर कमरा, फिर अलमारी, फिर बॉक्स, फिर सुंदर डिब्बी, फिर मखमल तब जाकर हीरे तक पहुँच बनी। इसी प्रकार आत्मा रूपी हीरे तक पहुँचने के लिए यह शरीर, इसकी इन्द्रियाँ, इसके सम्बन्ध, इसके पदार्थ इन सबको पीछे छोड़ना पड़े। इन सबसे पार जाकर भृकुटी रूपी अकाल तख्त पर विराजमान बिन्दुरूप ज्योतिस्वरूप आत्मा पर मन एकाग्र करना पड़े, तब भीतर के नेत्र से उसका दर्शन और अनुभव होता है और इसके बाद शुरू होती है आत्मा और मन के शुद्धिकरण की प्रक्रिया।

आत्मा को संवारे बिना मन नहीं संवरता

मानव का स्वभाव है कि वह दिखने वाली चीजों को सँवारता है, जो दिखती नहीं, उनकी तरफ ध्यान देता नहीं। शरीर और शरीर के वस्त्र दिखते हैं, इन्हें चमक-दमक से भर लेता है परन्तु आत्मा, जो दिखाई नहीं देती, उसे संवारना मुश्किल समझता है परन्तु जैसे बीज को संवारे बिना पेड़ की श्रेणी नहीं सुधर सकती, इसी प्रकार आत्मा को संवारे बिना मन नहीं संवरता और उसके बिना इन्द्रियों को वश नहीं किया जा सकता। पेड़ का बीज ही सबसे महत्त्वपूर्ण है। यदि कोई कहे कि बीज तो दिखता नहीं है, दिखते तो तना, पत्ते, डालियाँ हैं, हम उनको सुन्दर बनाएँगे। गीला कपड़ा लेकर पेड़ के पत्ते, डालियाँ पोंछते रहिए, परिणाम क्या निकलेगा, पेड़ सूख जाएगा। न फल देगा, न छाया देगा। इसलिए बीज दिखे या न दिखे, सींचना, सँवारना तो उसे ही है। इसी प्रकार आत्मा की संकल्प शक्ति मन के विचार दिखें या न दिखें, संवारना तो उन्हीं को है।

साक्षी होकर देखें खोल बदलने के खेल को

हम सब जानते हैं और प्रतिदिन देखते हैं कि शरीर की मृत्यु के बाद शरीर को जला दिया जाता है। अवश्य ही शरीर को पहनने वाला मालिक जब निकल गया तो खाली खोल को जलाकर या दबाकर या अन्य रीति से नष्ट कर दिया गया। मालिक आत्मा को प्रकृति नया खोल प्रदान करेगी और इस प्रकार खोल (काया) बदलने का यह खेल चलता रहेगा। पर जब हम इस खेल को साक्षी होकर खेलने की बजाय इसमें उलझ जाते हैं और देह के स्वरूप को ही मैं मान लेते हैं तो घड़ी-घड़ी मन की स्थिति ऊपर-नीचे होती रहती है। कभी खुश, कभी उदास, कभी महिमा चाहिए, कभी चीज़ें चाहिएँ। किसी ने कहा, आप बौने हो, यह सुनकर हम उदास हो गए। परन्तु ईश्वरीय ज्ञान कहता है, लम्बा या बौना तो यह खोल है, आत्मा न लम्बी है, न बौनी है। किसी ने कहा, तुम्हारे चेहरे पर झुर्रियाँ आ गईं, सुनकर चैन चला गया कि अरे मैं बूढ़ा दिखने लगा पर ये तो आवरण की झुर्रियाँ हैं। आत्मा तो कभी बूढ़ी होती नहीं। यह खोल तो फटेगा भी, इसकी चिन्ता क्यों? देह के भान से परे, आत्मा के भान में आते हैं तो ये चीज़ें प्रभाव नहीं डालतीं। तब मन में ये विचार चलते हैं कि मैं आत्मा हूँ, पार्टधारी हूँ, मेहमान हूँ, अकेली आई हूँ, अकेले जाना है, इस नश्वर संसार की चीज़ों में फँसना नहीं है। साक्षी और न्यारा होकर पार्ट बजाना है।

बुद्धि द्वारा मन की निगरानी करें

मन में उपरोक्त प्रकार का चिन्तन चलता रहे, इसका दृढ़ता से पालन करें। मन की निगरानी में सदा बुद्धि को लगाए रखें कि यह किस इन्द्रिय के द्वारा, किसी विषयासक्ति में तो नहीं फँस गया और फिर उसे वहाँ से खींचकर वापस आत्मचिन्तन में लगा दें। जिस विषय में यह बार-बार उलझता है उसकी नश्वरता, उसकी बनावटी चमक और उसमें आसक्ति के कुपरिणाम बार-बार मन के सामने ले आएँ जिससे वह उस विषय को विकार मानकर

उससे वैरागी बने। यदि मन किसी देहधारी की सुन्दरता की तरफ दौड़ता है तो बुद्धि द्वारा समझाएँ कि यह शरीर हड्डी, माँस, चर्म, जीवाणु, पसीना और दुर्गन्ध से भरपूर आवरण मात्र है। इसकी सुन्दरता का आधार इसमें विराजमान प्रकाशमान आत्मा है अत: स्नेह का पात्र वही है। यदि बात-बात में यह क्रोधित होता है तो इसे समझाएँ कि दूसरों के दुर्गुण रूपी ईंधन का जितना ज्यादा संग्रह करेंगे, क्रोधाग्नि उतनी ज्यादा भड़केगी। इसे बुझाने के लिए दूसरों के गुणों का संग्रह करें। इसी प्रकार अन्य विषयासक्तियों की ओर जाते मन को समझा दें।

अपनी समस्याएँ अपने को सुधारने से हल होंगी

हम यह पक्का करें कि मैं अर्थात् मैं आत्मा अपने मन की मालिक हूँ, उसके विचारों की सर्जक हूँ, उसकी हर प्रक्रिया की ज़िम्मेवार हूँ। हम यह कहकर कि मन वश में नहीं रहता, अपनी ज़िम्मेवारी से भागने का प्रयास न करें। जब हम अपने मन को नहीं समझाते तो हमारी ऊर्जा दूसरों के मन को अपने अनुकूल करने में, उसे समझाने में लगने लगती है। हम दूसरे को टोकते हैं कि क्या आपको सम्मान देना नहीं आता। कारण यह है कि हम अपनी विचारधारा पर अंकुश नहीं लगा पा रहे हैं और सोचते हैं कि सामने वाले का सुधार हो जाए तो मुझे उससे अपेक्षित व्यवहार मिले और मेरा मन उद्विग्न न हो। परन्तु अपने मन की समस्याएँ, अपने मन को सुधारने से हल होंगी, दूसरों को कितनों को सुधारेंगे, वे तो अनगिनत हैं।

सभी से निभाते हुए दिव्य कर्त्तव्य को न भूलें

जिस प्रकार से सरकार की तरफ से नियुक्त सी.बी.आई.के अधिकारी किसी बात की सच्चाई जानने के लिए अपना रूप बदलकर भिखारी भी बन जाते हैं। दूसरों के साथ घुल-मिल कर उन जैसे ही हो जाते हैं परन्तु सच्चाई को सामने लाने के अपने लक्ष्य को कभी नहीं भूलते। ऐसे ही हम भी अपने को सर्वोच्च ईश्वरीय सरकार द्वारा नियुक्त, सत्य की स्थापना के निमित्त समझते हुए लोगों के बीच रहते हुए भी अपने दिव्य कार्य को न भूलें। सभी से निभाते हुए अपने कर्त्तव्य को सदा स्मृति में रखें तो इन्द्रियों के विषयों से अनासक्त और पिता परमात्मा में आसक्त रहेंगे।

अत: मन को जीतने का अर्थ है मन के विचारों को ज्ञानमय बनाना जिससे इन्द्रियाँ स्वत: ही संयमित हो जाएंगी। एक मन को आत्मा का आज्ञाकारी बनाने से सभी कर्मेन्द्रियाँ आज्ञाकारी बन जाएंगी, एक-एक इन्द्रिय पर मेहनत करने की ज़रूरत नहीं रहेगी।

– ब्र.कु. आत्मप्रकाश

तुरन्त आवश्यकता है

शिवमणि होम के नजदीक, आबू रोड, तलहटी स्थित एस.एल.एम.ग्लोबल नर्सिंग कालेज के लिए कम्युनिटी नर्सिंग तथा ओबीजी में विशेषज्ञतायुक्त बी. एस. सी. (नर्सिंग) ग्रेजुएट-2 तथा एम. एस. सी. (नर्सिंग) -2 स्त्री अथवा पुरुष की आवश्यकता है। कम से कम एक वर्ष तक सेवा का अनुभव अनिवार्य है।

सम्पर्क सूत्र: E-mail: slmgnc.raj@gmail.com
मोबाइल नं. 9875197194

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का विस्तृत समाचार

पृष्ठ 3 से आगे...

पूज्य दादी जानकी जी के नेतृत्व में आज हम ज्ञान के प्रकाश को सारे विश्व में फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। हम एक ऐसे देश की संतान हैं जो कभी भी अपने विचारों को थोपने में विश्वास नहीं करता। हम लोग इस बात को मानते हैं कि ज्ञान की ना तो सीमाएँ होती हैं, ना कोई समय के बंधन होते हैं, ज्ञान को ना तो पासपोर्ट की आवश्यकता होती है, ना ही किसी वीजा की जरूरत होती है। ज्ञान तो युगों-युगों तक मानव संपदा होती है और उस ज्ञान मार्ग से ही हम जीवन के सत्य को जान पाते हैं। भारत एक ऐसा देश है जिसने सारे विश्व को डंके की चोट पर कहा है कि ईश्वर एक है। हिन्दू का भगवान अलग, मुसलमान, ईसाई या पारसी का अलग, यह हमारा चिंतन नहीं है। इसलिए ज्ञान के संदर्भ में भी हमारे महापुरुषों ने, हमारे वेदों-शास्त्रों ने हमें यही सिखाया कि सत्य एक है।

मैंने सुना कि शान्तिवन में आपने एक सोलार प्रोजेक्ट का भी प्रारंभ किया है। मुझे आपके हॉस्पिटल को भी देखने का मौका मिला था। कैसे वह हॉस्पिटल गरीबों की सेवा कर रहा है, मैंने अपनी आँखों से देखा था। मुझे याद है कि आबूरोड में ही सोलार एनर्जी को इस्तेमाल करने का आपने बहुत पहले निर्णय कर लिया था, जब दुनिया में ग्लोबल वार्मिंग की इतनी चर्चा भी नहीं होती थी। आप कितनी दीर्घदृष्टि से कार्य करते हैं, इसका यह उदाहरण है। मुझे विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में सारे देश में और मानव जीवन में ऊर्जा की क्रांति आएगी। जितना प्रकृति में सौर ऊर्जा का महत्व है उतना ही व्यक्तित्व में शौर्य ऊर्जा का भी महत्व है। यदि ओज, तेज, सामर्थ्य, संकल्प हो तो व्यक्ति नई ऊँचाइयों को पार कर सकता है। आबू रोड जैसे छोटे स्थान पर 3 मेगावाट सोलार प्रोजेक्ट का आरंभ होना अवश्य ही सबके लिए एक प्रेरक का कार्य करेगा। आज शान्तिवन सौर ऊर्जा से जुड़ रहा है। यह प्रकृति की रक्षा का कार्य है।

आपके सोलार कुकिंग सिस्टम में 1 दिन में 38,000 से ज्यादा लोगों का भोजन बन सकता है, प्रकृति की रक्षा में आप कितना बड़ा कार्य कर रहे हैं! आपके द्वारा सोलार कुकिंग सिस्टम, सोलार लालटेन इत्यादि को भी घर-घर तक पहुँचाने का एक बड़ा आंदोलन चल रहा है। एक बहुत बड़ा बदलाव समाज में लाने का प्रयास आपके द्वारा हो रहा है। केवल आध्यात्मिक बातें ही नहीं बल्कि प्रकृति के साथ जी कर, गरीब से गरीब व्यक्ति के जीवन में कैसे बदलाव लाया जाए, उस दिशा में प्रयास आप कर रहे हैं।

जब 2022 में भारत की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने वाले हैं, तब सोलार ऊर्जा, रिन्युवेबल एनर्जी के संबंध में हम क्या कर सकते हैं, इस पर सोचने की जरूरत है। ऊर्जा की बचत के लिए LED बल्ब प्रयोग में लाने के लिए भारत सरकार प्रयासरत है। ब्रह्माकुमारी, ब्रह्माकुमारों ने जैसे सोलार ऊर्जा के लिए काम किया है, वैसे LED बल्ब के विषय में भी लोगों में जागृति ला सकते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा जो अनेक बड़े काम किये जा रहे हैं उनमें इसे भी जोड़ा जा सकता है।

हमारे शास्त्रों ने हमें प्रकृति का शोषण करने के लिए नहीं कहा। हमें केवल प्रकृति का दोहन करने का हक है। उसमें आपका प्रयास जरूर काम आएगा। ब्रह्माकुमारी संस्था का एक मंत्र – एक ईश्वर, एक विश्व परिवार है। यह मूलत: हमारे देश का चिंतन है वसुधैव कुटुंबकम् का। सारी दुनिया में इतना व्यापक व विशाल विचार इसी धरती से पैदा हुआ है।

आज जब हम 80 वर्ष मना रहे हैं तब आपसे आग्रह करूँगा कि आप इस बात पर सोचिए कि 2022 में जब देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने वाले हैं, इस देश की आजादी के लिए मरने-मिटने वालों ने जो सपने देखे थे, क्या हम सबका जिम्मा नहीं है, उनको पूरा करने के लिए हम कुछ करें? हम 2022 तक ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से इसे पूर्ण करके रहेंगे, यह निर्णय आज ले लीजिए। इससे लोगों का बहुत बड़ा कल्याण होगा।

नोटबंदी के बाद भ्रष्टाचार और कालेधन के खिलाफ एक निर्णायक लड़ाई में हम आगे बढ़ रहे हैं। देश को काले धन से बचाने के लिए डिजिटल टेक्निक्स का बहुत बड़ा हाथ हो सकता है। नगद की लेनदेन जितनी कम हो और

डिजिटल लेनदेन जितनी ज्यादा हो, इससे हम सारे देश में एक अच्छी व्यवस्था खड़ी कर सकते हैं। आप छोटे-छोटे व्यापारियों को भी डिजिटल लेनदेन के लिए प्रेरित कर सकते हैं। मैं आप लोगों को बहुत ही हक से कह सकता हूँ कि इस काम के लिए आप लोगों को जरूर प्रेरित करें।

हमारे देश में आज भी लाखों की संख्या में ऐसे बच्चे हैं जो टीकाकरण से वंचित हैं। टीकाकरण से वंचित होने के कारण वे किसी न किसी गंभीर बीमारी के शिकार हो जाते हैं। माँ मृत्युदर, शिशु मृत्युदर और कुपोषण चिंता का विषय होता है। छोटे-छोटे बच्चों की जिंदगी बचाने के लिए टीकाकरण का जब कार्यक्रम हो, आप उसमें भी जुड़कर सेवा कर सकते हैं।

मैं एक और काम के लिए आपसे आग्रह करता हूँ कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एक ऑनलाइन कोर्स कुपोषण के संदर्भ में आरंभ करे और लोगों को ऑनलाइन एग्जाम के लिए प्रेरित करे। इस विषय में बहुत बड़ी अज्ञानता लोगों में है। किस उम्र में क्या खाना चाहिए, शरीर में किन चीजों की जरूरत है, इसके सही ज्ञान का भी अभाव है। दो समय का भोजन हो गया तो पेट भर गया, यह हमारी सोच बन गई है। जिसकी आर्थिक स्थिति ठीक है, जो दो वक्त भोजन कर सकता है, उसे भी पता नहीं है कि क्या खाना है, क्या नहीं खाना है, कैसे खाना है। शरीर के पोषण में किन-किन चीजों की आवश्यकता है, किसी चीज की कमी हो तो कैसे नुकसान होता है, अगर एक सर्टिफिकेट कोर्स या ऑनलाइन ट्रेनिंग ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय द्वारा इस संदर्भ में कराई जाए तो आप एक आंदोलन खड़ा कर सकते हैं। हिन्दुस्तान के कई विश्वविद्यालयों को आप अपने साथ जोड़ सकते हैं। आपका ऐसा संगठन है जिसमें महिलाओं की संख्या ज्यादा है और महिलाओं की सक्रिय भूमिका है। अगर कुपोषण की समस्या का समाधान करना है तो आप इस दिशा में बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। मैं भारत सरकार से भी कहूँगा, राज्य सरकारों से भी आग्रह करूँगा कि यदि आप इस दिशा में आगे आते हैं तो वे भी आपको मार्गदर्शन और मदद देंगे। यह काम आपके माध्यम से बहुत ही अच्छी तरह से हो सकता है। आप इसके लिए संकल्प जरूर लें।

इस समागम से दुनिया के सभी देशों के लोग भारत के महान चिंतन को साथ लेकर जाएंगे। ज्ञान का प्रकाश सब जगह पहुँचेगा और मानव कल्याण के लिए काम आएगा। दादा लेखराज ने जो कार्य आरंभ किया था, आपके प्रयत्नों से उसे एक नई ऊर्जा मिलेगी। दादी जी द्वारा 101 वर्ष की उम्र में भी इतना कठोर परिश्रम और उनका जीवन नई पीढ़ी को प्रेरणा देता रहेगा। एक नई ऊर्जा के साथ लोगों को काम करने की ताकत मिलती रहेगी। जब मैं स्वच्छ भारत अभियान चला रहा था तो दादी जी हमारी एंबेसडर रही हैं। दादी जी ने हमारे स्वच्छता अभियान को बल दिया है। मुझे विश्वास है कि सफेद वस्त्रों में हमारे ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी स्वच्छता के आंदोलन को बहुत बड़ी ताकत दे सकते हैं। महात्मा गांधी के, 2019 में 150 वर्ष पूरे होंगे तब भारत के जन-जन में स्वच्छता के प्रति जागरूकता आए, इस दिशा में हमें काम करना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप इसे करके दिखाएंगे क्योंकि आपके पास बहुत बड़ा संगठन है और एक पवित्र कार्य के लिए आप लोग प्रेरित हैं। अंत में आप सबको मेरी तरफ से ओम शान्ति, ओम शान्ति, ओम शान्ति।''

ब्रह्माकुमारी संस्था की प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी जी ने अपने उद्‌बोधन में प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी को माउंट आबू आने का निमन्त्रण दिया। उन्होंने कहा, नरेन्द्र भाई पूरे विश्व को प्रेम, खुशी, शक्ति दे रहे हैं, इसकी बधाइयाँ।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर संस्था के महासचिव ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई ने भारत के सभी स्कूल-कॉलेजों में मूल्य एवं आध्यात्मिक शिक्षा शुरू करने की मांग की। निर्वैर भाई ने कहा कि बच्चों को आध्यात्मिक शिक्षा दी जाए तो भारत को विश्वगुरु बनने से कोई नहीं रोक सकता।

26 मार्च, सुबह उद्‌घाटन पूर्व सत्र के मुख्य अतिथि **भाजपा के वरिष्ठ नेता व भारत सरकार के पूर्व उप-**

प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी थे। अपने उद्बोधन में उन्होंने कहा, ''दादा लेखराज द्वारा स्थापित ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, जिसकी शुरूआत ओम मंडली के रूप में हुई थी, आज सारे ब्रह्मांड में फैल चुका है और लोग इसे देखकर चकित हो रहे हैं। जब मैं किसी से ब्रह्माकुमारीज़ का परिचय कराता हूँ तो मैं बताता हूँ कि भारत में ही नहीं बल्कि सारे विश्व में यह एकमात्र ऐसा संगठन है जिसका कार्य मुख्यत: महिलाओं ने आरंभ किया और महिलाओं ने ही इसे इतना विस्तार दिया। वैसे तो इस संगठन की अनेक विशेषताएँ हैं लेकिन मैं इस बात को सर्वाधिक महत्व की मानता हूँ, जो दुनिया की किसी और संस्था में नहीं है कि जिसकी नींव भी महिलाएँ रही हों और विस्तार भी बहनों के द्वारा हुआ हो। पूरा का पूरा संगठन शुरू से ही बहनों के द्वारा चल रहा है।

जब ये विशाल परिसर बन रहा था उन दिनों मुझे यहाँ आने का अवसर मिला था। हिन्दुस्तान के किसी कोने में मैंने इतना बड़ा हॉल नहीं देखा जिसमें एक भी स्तंभ नहीं है और जिसमें 20,000 लोग समा सकते हैं और वह भी अनेक सुविधाओं के साथ। मेरा संबंध इस संस्था से शुरू से रहा है और संस्था ने 80 सालों में जो प्रगति की है, वह देखकर आश्चर्य होता है। मेरा बचपन से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से नाता रहा है और मैं मानता हूँ कि हिन्दुस्तान में जितने भी अच्छे संगठन बने हैं उनमें से वह भी एक है। मैं उस पर गर्व करता हूँ क्योंकि मैंने उसी से ही शिक्षा और संस्कार पाए हैं और अनुशासन सीखा है। उसी तरह मैं इस बात को स्वीकार करता हूँ कि ब्रह्माकुमारी संगठन से भी मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला है। वे सभी लोग जो भारत को ऊँचा बनाना चाहते हैं, जो हरेक भारतवासी के अंदर देशभक्ति की भावना भरना चाहते हैं और एक-एक व्यक्ति में ईमानदारी, अनुशासन जैसे गुण कूट-कूट कर भरना चाहते हैं, वे सब इस संगठन से यदि कुछ सीखेंगे तो देश का बहुत बड़ा भला होगा। इतने अनुशासन व व्यवस्था से यहाँ सब लोग बैठे हैं और कार्य कर रहे हैं, यह बहुत खुशी की बात

है। यह सब कुछ देख कर आनंद होता है।

इस संस्था की प्रमुख दादी जानकी जी ने कुछ समय पहले ही 101 वर्ष की अपनी आयु पूरी की है, यह हमारे लिए गर्व की और आनंद की बात है। यह उपलब्धि सहज नहीं होती। प्रभु की कृपा उन्हीं लोगों पर होती है जिन्हें प्रभु मानते हैं कि ये सारे विश्व के लिए एक आदर्श हैं और जो अपने आचरण से सारी दुनिया को प्रभावित करते हैं। यहाँ की एक-एक चीज में आदर्शवादिता है। इसलिए मुझे यहाँ आकर बहुत ही आनंद और हर्ष हुआ। यहाँ हर चीज में मुझे श्रेष्ठता दिखती है। यह ऐसा संगठन है जो विश्व को मार्ग दिखा सकता है। यह केवल भारत के लिए नहीं बल्कि सारे विश्व के लिए है। सारे विश्व के लोग आपका अनुसरण करते हैं और आपको आदर्श मानते हैं। यहाँ आकर मैं बहुत खुश और आनंदित हुआ हूँ।

मेरा जन्म कराची (सिंध) में हुआ। मैंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़कर यह सीखा कि जीवन में आचरण में कभी बेईमानी नहीं आनी चाहिए, कभी किसी के साथ गलत काम नहीं करना चाहिए और यदि कोई गलत कार्य करता है तो उसे कभी प्रोत्साहन नहीं देना चाहिए। इन छोटी-छोटी बातों को बचपन से सीख कर ही मैं समाज के लिए आज कुछ कर पाया हूँ। जो इस संगठन के माध्यम से देशसेवा करना चाहते हैं, वे भी अपने अंदर ईमानदारी, सात्विकता और शुद्धता से कभी समझौता न करें। लोग कहें कि ये व्यक्ति गलत काम नहीं कर सकते।

जो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कार्यकर्त्ता है, ब्रह्माकुमारी संस्था का सदस्य है वह कभी गलत काम नहीं कर सकता। इस प्रकार की धारणा सब लोगों की हमारे प्रति बने। ब्रह्माकुमारी संगठन ने बहुत बड़ा आदर्श हमारे सामने रखा है। दादा लेखराज जी जिस तरह के आदर्श व्यक्ति थे उसी तरह का आदर्श संगठन उन्होंने बनाया है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए उतनी कम है। इसका सम्पूर्ण संचालन महिलाओं के द्वारा होता है। हालांकि यहाँ पुरुष भी हैं लेकिन पुरुष भी महिलाओं से सीखते हैं। परिवार में सबसे मुख्य दायित्व माँ का होता है, उसी तरह यह संगठन भी दादी जानकी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है। बार-बार इन सब बहनों को मैं प्रणाम करूँगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इस संस्था के कारण पूरी दुनिया में भारत का नाम होगा।''

संस्था के कार्यकारी सचिव, एजुकेशन विंग के निदेशक और कार्यक्रम संयोजक ब्रह्माकुमार मृत्युंजय भाई ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने देशभर से पधारे जनप्रतिनिधियों, आई. ए. एस. अफसरों और मीडियाकर्मियों सहित सभी का स्वागत किया। इसके साथ ही सभी अतिथियों ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

महासम्मेलन के उद्घाटन पूर्व सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए **राज्यसभा के उप सभापति पी. जे. कुरियन** ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान आध्यात्मिकता का महान कार्य कर रहा है। इसका विश्वभर में नेटवर्क है। इसके संस्थापक ब्रह्मा बाबा ने महिला सशक्तिकरण का सही उदाहरण प्रस्तुत किया जो दुनिया के लिए अनुकरणीय है। उन्होंने कहा कि योग ही लुप्त हो रही भारतीय संस्कृति को बचा सकता है इसीलिए मैंने 2012 में राज्यसभा में देश के सभी स्कूलों में योग-शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करने की मांग की थी। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज की ओर से स्थापित उन्नत सोलार प्लांट यहाँ की वैज्ञानिक सोच का परिचायक है। यह ऊर्जा बचाने के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम है। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ को समाज-सुधार के अपने महान प्रयासों को और अधिक तीव्र करना चाहिए ताकि जन-जन में जागृति आ सके।

सिने जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री रवीना टंडन ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्था सभी को प्यार, मोहब्बत और सेवा सिखाती है। यह एक ममता भरी संस्था है जहाँ ममता के आंचल में प्रेम सिखाया जाता है। यहाँ मैंने जीवन में पहली बार दादी जी की आँखों में झांककर अपनी सोल (आत्मा) को देखा है। यहाँ आकर मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई। देश की अगली पीढ़ी को संवारना मुश्किल लग रहा है लेकिन ब्रह्माकुमारी संस्था के सुविचारों को फैलाया जाए तो अगली पीढ़ी में अच्छे संस्कारों का निर्माण हो सकेगा। उन्होंने कहा कि मुझे यहाँ से जुड़कर काफी कुछ सीखने और अपनी प्रतिभा निखारने में अहम योगदान मिला है। संस्था की ओर से आर्ट एवं कल्चर के क्षेत्र में मुझे पुरस्कार से नवाजा गया, जिसे पाकर मैं बहुत खुश हूँ। उन्होंने अपनी आने वाली फिल्म मातृ के लिए भी आशीर्वाद मांगा जो 21 अप्रैल को रिलीज हो रही है।

सिने स्टार अमिता नांगिया अपने अनुभव बताते हुए भाव-विभोर हो गई। उनकी आँखों से आँसू निकल आए। उन्होंने कहा कि मैं यहाँ आकर अपने घर जैसा महसूस कर रही हूँ। यहाँ अद्भुत शान्ति और सुकून मिला। इसे मैं शब्दों में बयाँ नहीं कर सकती हूँ। आज दुनिया जिस ओर जा रही है उसे आध्यात्मिकता की बेहद जरूरत है। यहाँ मुझे बहुत ही पॉजीटिव एनर्जी महसूस हुई। मुझे यहाँ भगवान ने ही भेजा है, उनके आशीर्वाद के बिना यह संभव नहीं है।

संस्था के अतिरिक्त महासचिव व प्यूरिटी

पत्रिका के संपादक ब्रह्माकुमार बृजमोहन ने कहा कि मैं 21 वर्ष की आयु में ही ब्रह्माकुमारीज में आ गया था। सी.ए. के पेशे ने मुझे सिखाया कि बिजनेस में जो जाए, उसमें घाटा और जो आए उसमें फायदा लेकिन यहाँ आकर मैंने एक बात सीखी कि 'जो जाए उसमें फायदा और जो आए उसमें घाटा' अर्थात् सदा बुराइयों, अवगुणों को छोड़, सद्‌गुण और सद्‌विचारों का स्वागत करना चाहिए। दुनिया में तीन सत्ताएँ प्रमुख होती हैं – धर्म-सत्ता, विज्ञान-सत्ता और राज्य-सत्ता। जहाँ महिलाओं का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। इसी बात को चरितार्थ करते हुए संस्था का संचालन शुरू से ही बहनों-माताओं द्वारा किया जा रहा है। सब कहते हैं, जो भी ब्रह्माकुमारी संस्था में आता है, उस पर जादू हो जाता है। यहाँ पवित्रता का जादू है क्योंकि पवित्रता में ही सबसे बड़ी शक्ति है। यहाँ कोई भेदभाव नहीं है। यहाँ एक परमपिता को मानकर ही सभी चलते हैं।

कार्यक्रम के दौरान माननीय अतिथिगण द्वारा 100 फीट ऊँचा शिवध्वज फहराया गया, साथ ही आसमान में गुब्बारे छोड़कर विश्व-शान्ति का संदेश दिया गया। विश्व-एकता के मकसद से विश्व के सभी देशों के राष्ट्रीय ध्वज लगाए गए थे। संस्था की ओर से की गई विभिन्न सेवाओं एवं उपलब्धियों की विशाल प्रदर्शनी का उद्‌घाटन सभी अतिथियों ने फीता काटकर किया और अवलोकन कर इसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की।

'ज़ी न्यूज' के एडिटर इन चीफ सुधीर चौधरी ने कहा, ''संस्थान में आकर मैं खुद को आध्यात्मिक रूप से बहुत ही उन्नत और समृद्ध महसूस कर रहा हूँ। इन तरंगों से मैं अभिभूत हूँ। ऐसा लग रहा है कि हम किसी गरीब देश से एक अमीर देश में आ गए हैं। हम एक ऐसी जगह से यहाँ आए हैं जो आध्यात्मिक रूप से गरीबी की रेखा के नीचे है। सैनिक देश की सीमाओं की रक्षा करते हैं। उसके बाद आजकल सोशल मीडिया की आर्मी का भी नाम लिया जाता है मगर यहाँ आकर यह महसूस हुआ कि अब हमें स्प्रीचुअल आर्मी की जरूरत है। आज देश के सामने सवाल यह है कि हमारे 130 करोड़ लोगों के चरित्र की रक्षा कौन करेगा। तब पूरा देश ब्रह्माकुमारीज़ की तरफ देखता है। सरकारें सुविधा की बातें करती हैं लेकिन खुशी लाने के लिए कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं करती, ऐसे में दिनोंदिन देश में खुशी का स्तर गिरता जा रहा है। मीडिया के माध्यम से हम आध्यात्मिक विचारों के प्रचार-प्रसार का कार्य करेंगे। मीडिया के न्यूजरूम में हमेशा नेगेटिव माहौल रहता है। जितने लोग मरते हैं, उतनी बड़ी खबर बन जाती है। ऐसी जगहों पर भी ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञान के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है।''

'इंडिया न्यूज' के एडिटर इन चीफ दीपक चौरसिया ने कहा कि आज यहाँ हुए अनुभव को शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है। दिल्ली में ऋणात्मक वातावरण है। कहीं भाई-भाई से लड़ रहा है तो कहीं राजनेता। जो लोग नहीं झगड़ रहे हैं वे दूसरों की चिंता में दुखी हो रहे हैं। ऐसी दुनिया में पिता परमेश्वर से प्रेम की सीख देना सचमुच अद्‌भुत है। मध्यप्रदेश सरकार ने हैप्पीनेस

मिनिस्ट्री बनाई है, ऐसा देश भर में होना चाहिए। खुश रहने के लिए अपने आप से प्यार करें और हिम्मत से सबको आगे बढ़ाएँ। संस्थान के बारे में कहा कि वे बचपन से ही इससे जुड़े थे मगर पत्रकारीय जीवन की व्यस्तताओं के कारण सब पीछे छूट गया। आज फिर उस ऊर्जा, शक्तिपुंज को यहाँ पर पा लिया। चौरसिया ने कहा कि यह संस्थान दुनिया का आध्यात्मिक रोशनदान है जिसे खिड़की बनाने की जरूरत है। मैं पूरी दुनिया में घूमा मगर भारत जैसा आध्यात्मिक देश कहीं नहीं। आज के समाज में सम्बन्ध प्रमाण-पत्रों तक सीमित रह गये हैं, जो सम्बन्धों में गिरावट के द्योतक हैं, इसमें सुधार की आवश्यकता है।

राजस्थान के राजस्व मंत्री अमराराम ने अटल बिहारी वाजपेयी की कविता सुनाते हुए कहा कि जीवन व्यर्थ की बातों में बीता जा रहा है, इसे राजयोग के माध्यम से सार्थक और सुंदर बनाने की आवश्यकता है। वही जीवन सार्थक है जो दूसरों के काम आ जाए। हमें खुद को हर हाल में बदलना होगा। जब तक अंदर से हम अपने विचार नहीं बदलेंगे, तब तक हमारे मन में शान्ति नहीं आएगी।

एशिया नेट चैनल के हैड रघुरामचंद्रन ने कहा कि जीवन एक संघर्ष है जिसमें हमें बुराइयों के खिलाफ लगातार लड़ना है। वे ही लड़ाई और जीत के सच्चे हकदार हैं जो अपने कर्त्तव्य और जिम्मेदारियों का सच्चे मन से निर्वहन करते हैं। मोबाइल ने हमसे चिंतन का वक्त छीन लिया है। यहाँ आकर महसूस होता है कि हम आपाधापी भरी दुनिया से दूर चले आए हैं। हमें ब्रह्माकुमारी जैसी संस्थाओं की शिक्षाओं की जरूरत है।

यूरोप के सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्रह्माकुमारी जयंती बहन ने कहा कि भारत से सारे विश्व को राजयोग की सौगात मिली है। आज पूरे विश्व को योग की आवश्यकता महसूस हो रही है। जब मनुष्य को कहीं से कुछ प्राप्ति होती है तो वह वहाँ से अपने आप जुड़ता चला जाता है। भारत से ही विश्व को ब्रह्माकुमारीज के माध्यम से आध्यात्मिक रोशनी प्राप्त हुई है। सर्वशक्तिमान से जब हम अपना संबंध जोड़ते हैं तो शक्ति मिलती चली जाती है। हम अंतर्मुखी होकर अंतर्मन की यात्रा करते हैं तो शान्ति का अनुभव होता है।

पत्रिका समूह के प्रधान सम्पादक गुलाब कोठारी ने कहा कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मातृप्रधान संस्थान है इसलिए यह दुनियाभर में फैल गया। किसी को प्रेम, स्नेह, करुणा और चैतन्यता का मार्ग मातृशक्ति ही दिखा सकती है। दुनिया नारी के आगे-पीछे चलती है। भले ही वह माँ, पत्नी या पुत्री रूप में हो। ब्रह्माकुमारीज संस्थान इसीलिए 130 से अधिक देशों में फैल गया क्योंकि दादा लेखराज ने अस्सी वर्ष पूर्व इस तत्व को अच्छी तरह महसूस कर लिया और इसकी कमान मातृशक्ति के हाथ में सौंप दी। कोठारी जी ने कहा कि जो संस्थाएँ पुरुष प्रधान हैं वे राष्ट्र से बाहर निकल नहीं पाईं। रूपान्तरण की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि साधनों का रूपान्तरण नहीं किया जा सकता, सिर्फ आत्मा का ही रूपान्तरण हो सकता है। रूपान्तरण के लिए हमें अपनी आत्मा का विस्तार करना पड़ेगा। व्यक्ति भाव से समष्टि भाव में जीने का रास्ता पकड़ना पड़ेगा। जीवन-दर्शन की व्याख्या करते हुए कोठारी जी ने कहा कि संकल्प के बिना निर्माण नहीं है। जब बीज जमीन में गड़कर अपना अस्तित्व त्यागेगा, तभी वह पेड़ बनेगा। यह सृष्टि का चक्र इसी तरह चलता है। इस चक्र को सोम और अग्नि के संयोजन से चलने वाले यज्ञ की संज्ञा देते हुए कहा कि सोम अग्नि में गिरता है, तभी नया सृजन होता है। यज्ञ का स्वामी सूर्य हर प्राणी का पिता है और सृष्टि वहीं से चलती है और सभी को मूल में वहीं जाना है। कोठारी जी ने संस्था के 80 वर्ष पूर्ण होने पर दादी जानकी को बधाई दी।

इलाहाबाद हाईकोर्ट, लखनऊ बेंच के वरिष्ठ न्यायाधीश शहीबुल हसनैन ने कहा, यहाँ दया, प्रतिबद्धता, ममता, करुणा देखने को मिलती है। वसुधैव कुटुम्बकम का जितना अच्छा चित्रण यहाँ हुआ है, कहीं नहीं हुआ। पूरा संसार एक परिवार है। हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं।

ब्रोडकॉस्ट एडिटर्स एसोसिएशन के जनरल सेक्रेटरी व वरिष्ठ पत्रकार एन.के.सिंह ने कहा कि बाजार की शक्तियों के बीच जीवन मूल्यों की शिक्षा देना और उनसे लड़ते हुए मूल्यों का प्रचार-प्रसार करना बहुत दुष्कर काम है और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान यह काम बखूबी कर रहा है। यह अद्भुत संस्थान है, इससे मैं पिछले 10 सालों से जुड़ा हूँ। जब भी यहाँ आता हूँ, खुद को हर बार यहाँ के लोगों से बहुत छोटा पाता हूँ। छोटेपन का यह अहसास ही मुझे यहाँ पर खींच लाता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री ने संस्थान को स्वच्छ भारत और सौर ऊर्जा के क्षेत्र की चुनौतियों से निपटने का जो भागीरथ कार्य दिया है, उसमें यह संस्थान पूर्ण रूप से सफल होगा।

यह चिंता की बात है कि आज देश का जीडीपी बढ़ रहा है मगर यूएन के हैप्पीनेस इंडेक्स में हमारा नंबर साल दर साल पीछे आता जा रहा है। इस इंडेक्स में खुशी की पुनर्स्थापना का काम कोई कर सकता है तो वह सिर्फ ब्रह्माकुमारीज़ है।

वरिष्ठ पत्रकार, एडिटर इन चीफ 'न्यूज नेशन', संजय कुलश्रेष्ठ ने कहा कि हमें नकारात्मकता के फ्रेम को अपने मस्तिष्क से मिटाना होगा। हमारा दिमाग एक-एक सूचना को ग्रहण करता जाता है। ऐसे में हमें उस फ्रेम को हटाना होगा जो हमें अध्यात्म से दूर ले जाए और अर्थ का अनर्थ करे।

फोरेन कोरेसपोन्डेंड्स क्लब ऑफ साऊथ एशिया इन इंडिया के अध्यक्ष एस. वेंकट नारायणन ने कहा कि भारत की संसद को ब्रह्माकुमारीज के यहाँ जैसी शान्ति की जरूरत है। उन्होंने उम्मीद जताई कि संस्थान विश्व के अशांत देशों जैसे सीरिया, ईराक आदि के लिए भी कोई शान्ति का संदेश दे।

ब्रह्माकुमारीज रिट्रीट सेंटर, न्यूयार्क की निदेशिका ब्रह्माकुमारी डोरोथी तथा मैक्सिको के पूर्व सांसद अर्नोस्टो कैस्टेलनस ने कहा कि भारत विश्व की आध्यात्मिक शक्ति है। इस दौरान अतिथियों की मौजूदगी में दादी जानकी ने केक काटकर सभी को बधाई दी। ❖

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में अभिनेत्री ग्रेसी सिंह द्वारा दी गई प्रस्तुति तथा उपस्थित विशाल जनसमूह

27 मार्च प्रात:कालीन सत्र

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के दूसरे दिन (27 मार्च) प्रात:कालीन सत्र में रशियन कलाकारों ने नाट्य प्रस्तुति से शान्ति और एकता का संदेश दिया। विजयनगरम की बालिकाओं ने शिव आराधना की प्रस्तुति से कला का कौशल दिखाया।

कार्यक्रम में पधारे **परमार्थ निकेतन आश्रम के प्रमुख स्वामी चिदानंद सरस्वती** ने कहा कि आज जहाँ पति-पत्नी तक का आपस में विश्वास नहीं होता, वहीं दादा लेखराज ने विश्वास का ऐसा बीज बोया कि लाखों लोग जुड़ते चले गए। दादा और दादी ने 'ओम शान्ति' मंत्र से लाखों का हृदय परिवर्तन कर दिया। लोग कहते हैं, 'बदलता है ज़माना अक्सर' मगर यहाँ कुछ ऐसे होते हैं जो ज़माना बदल देते हैं। सरकार ने अब 'मेक इन इंडिया' का मंत्र दिया है मगर दादा लेखराज ने बरसों पहले 'मेक इंडिया' का मंत्र दिया। दादी ने देश को आत्म-ऊर्जा का मंत्र दिया है।

समाजसुधारक, लेखक एवं कवि आचार्य डॉ. लोकेश मुनि जी ने कहा कि जब-जब मैं यहाँ आता हूँ और दादी जी के पास बैठता हूँ तो मेरी स्वयं की बैटरी चार्ज हो जाती है। नारी शक्ति द्वारा विश्व परिवर्तन का जो कार्य आबू से संचालित हो रहा है वह विश्व के अंदर अन्यत्र कहीं नहीं हो रहा। ब्रह्माकुमारी परिवार का मंत्र है 'तेरा तो तेरा, मेरा भी तेरा।' ये बहनें स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज निर्माण का कार्य कर रही हैं। जो काम सरकार करोड़ों खर्च करके नहीं कर सकती वह ब्रह्माकुमारी परिवार कर रहा है। उन्होंने कहा कि दादी जानकी को केवल भारत-रत्न नहीं, नोबल पुरस्कार मिलना चाहिए।

संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रत्नमोहिनी ने कहा कि जैसा कर्म हम करेंगे, हमें देख और करेंगे इसलिए सदा अच्छे कर्म, सुखदायी कर्म करने चाहिएँ। परमात्मा को अपना पिता बनाकर उनकी बातों को जीवन में लाएँ तो दामन खुशियों से भर जाएगा। इससे आत्मबल बढ़ेगा और खुशी भी मिलेगी।

'न्यूज 24' की एडिटर इन चीफ अनुराधा प्रसाद ने कहा कि मैं इतने सालों बाद यहाँ आई हूँ, मैंने बहुत मिस किया है। संस्था ने जो चेतना जगाई है वह विश्व की चेतना है। ब्रह्माकुमारी बहनों ने हर चीज को पवित्रता के साथ आगे बढ़ाया है। आज देश में 'राष्ट्रनीति' को बढ़ाने की जरूरत है। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ ने बड़ा काम किया है।

'नवग्रह टी.वी.' के सीईओ आर.सी.रैना ने कहा कि संस्था बहुत सहज तरीके से अपना कार्य कर रही है, सभ्य समाज का निर्माण कर रही है। हम देह अभिमानी नहीं, देही अभिमानी बनें। भारत में शिक्षा, सामाजिक परिवेश, राजनीति में बदलाव की जरूरत है। उन्होंने सवाल किया कि जब परमात्मा एक हैं तो क्यों इतने मत-मतांतर, धर्म और मान्यताएँ हैं? क्यों हम एक नहीं हैं? साथ ही पत्रकारिता में भी बदलाव की जरूरत बताई।

मल्टीमीडिया चीफ राजयोगी ब्रह्माकुमार करुणा भाई ने कहा कि आज पीस ऑफ माइंड चैनल द्वारा विश्वभर में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग मेडिटेशन का संदेश दिया जा रहा है। साथ ही प्रिंट, रेडियो और सोशल मीडिया के द्वारा भी समाज के हर वर्ग तक आध्यात्मिक संदेश पहुँच रहा है।

इस अवसर पर ईश्वरीय यज्ञ में तन-मन-धन से सेवा करने वाले समर्पित वरिष्ठ ब्रह्मावत्सों का स्वागत मुकुट पहनाकर और शॉल ओढ़ाकर किया गया। अतिथियों का भी सम्मान किया गया। इस महासम्मेलन के आयोजक ब्रह्माकुमार मृत्युंजय भाई का अपार उत्साह और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच विशेष तौर पर सम्मान किया गया।

मीडिया के क्षेत्र में विशेष कार्य करने पर 'न्यूज 24' की एडिटर अनुराधा प्रसाद एवं 'बिजनेस वर्ल्ड' के एडिटर अनुराग बत्रा को संस्था की ओर से एक्सीलेंस अवार्ड से सम्मानित किया गया।

ग्लोबल हॉस्पिटल माउण्ट आबू के निदेशक ब्रह्माकुमार डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि जैसी दृष्टि होती है, वैसी ही सृष्टि नजर आती है। मन को बदलने से ही परिवर्तन होगा। हम बदलेंगे तो जग बदलेगा। जब हमारा

मन स्वस्थ होगा तो तन भी स्वस्थ रहेगा।

के. जी. हॉस्पिटल, कोयम्बटूर के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. जी. भक्तवत्सलम ने कहा कि हम सभी के परमपिता परमात्मा एक हैं। हम एक पिता की संतान हैं। संस्था समाजहित के लिए बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है।

तेलंगाना राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष निरंजन रेड्डी ने कहा कि स्वयं के परिवर्तन के बिना कुछ भी संभव नहीं है। जब हम स्वयं में परिवर्तन करेंगे तो विश्व में परिवर्तन संभव होगा। यह कार्य संस्था द्वारा किया जा रहा है।

तेलंगाना सरकार के एडवाइजर डॉ. जी. विवेकानंद ने कहा कि तेलंगाना सरकार को राजयोग शिक्षा को पाठ्यक्रम में लागू करने के लिए सलाह दूँगा। साथ ही जल्दी ही इस पर एक्शन भी लिया जाएगा।

ब्रह्माकुमारीज़, कोलम्बिया के निदेशक मार्शेलो बल्क ने कहा कि शान्ति का साइन करने से शान्ति नहीं आती है। इसके लिए अंदर से मेहनत करनी पड़ती है जो यहाँ सिखाई जाती है कि हम स्वयं को कैसे बदल सकते हैं।

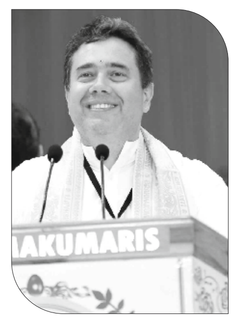

'बिजनेस वर्ल्ड' के एडिटर अनुराग बत्रा ने कहा कि यह संस्था हर परिवार और विश्व के लिए एक रोल मॉडल है। यहाँ जैसा परिवार पूरे विश्व में कहीं भी देखने को नहीं मिलता है।

'हिन्दी खबर' के एडिटर अतुल अग्रवाल ने कहा कि यहाँ आने से मेरी बैटरी चार्ज हो गई है। साथ ही यहाँ से सौ लोगों की ऊर्जा लेकर जा रहा हूँ। यहाँ के लोग इतने खुश रहते हैं, मुझे यह जानकर आश्चर्य होता है।

'प्रज्ञा टी.वी. चैनल' की हेड शिवानी अग्रवाल ने कहा कि यहाँ जो पॉजीटिव एनर्जी मिलती है, मीडियाकर्मियों को उसे अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए।

गुवाहाटी से 'दैनिक अग्रदूत' के एडिटर कनक

सेन देका ने कहा कि ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय आध्यात्मिक शक्तिपुंज है। यहाँ आकर जो अनुभूति होती है, उसे शब्दों में बयाँ करना मुश्किल है। परिवर्तन का संकल्प मन से शुरू होता है और खुद को बदलने के बाद हम दुनिया को बदल सकते हैं।

'असोमिया खबर' के चीफ एडिटर शंकर लश्कर ने कहा कि आंतरिक आध्यात्मिक ऊर्जा को जागृत करने के लिए ब्रह्माकुमारीज संगठन अहम भूमिका निभा रहा है। इसमें हर व्यक्ति को अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने में आगे आना चाहिए।

27 मार्च सायंकालीन सत्र

अंतर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के दूसरे दिन सायंकालीन सत्र में **केन्द्रीय लघु, सूक्ष्म एवं मध्यम उद्योग मंत्री कलराज मिश्र** ने कहा, ''विश्व में परिवर्तन आध्यात्मिकता, भौतिकता एवं परमार्थ ज्ञान के सामंजस्य से ही संभव है। हम परस्पर संवेदनशील रहकर खुद का आत्मिक विकास कर ही राष्ट्र का विकास कर सकते हैं। परस्पर सकारात्मक भाव हो, शिक्षा में अध्यात्म व आत्म-शक्ति का समावेश हो तो हम आसुरी शक्तियों का नाश कर देंगे। आध्यात्मिकता का पाठ्यक्रम में समावेश होगा तो सभी समस्याएँ अपने आप समाप्त हो जाएंगी। केन्द्रीय मंत्री मिश्र ने आगे कहा कि भारत के माध्यम से यदि विश्व को बदलना है तो ब्रह्माकुमारी के राजयोग से ही संभव है। राजयोग सही मायने में जीवनशैली है, जो शरीर को स्वस्थ रखने और जीवन को मर्यादित चलाने की सीख देती है। उन्होंने कहा कि सरस्वती, दुर्गा और लक्ष्मी की प्रतीक रूप बहनों को और ब्रह्मा बाबा को सामने रखते हुए हम भारत के स्वरूप को फिर से विश्व में प्रतिष्ठित कर सकते हैं। बाबा ने अपनी अनुशासित आत्मशक्ति से इस ज्ञान को पूरे विश्व में बिखेरा है।''

केन्द्रीय मंत्री मिश्र ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कार्यशैली में आध्यात्मिकता और नैतिकता का समावेश है। यही कारण है कि उनमें 24 घंटे काम करने की क्षमता है। भारत के मनीषियों ने हमेशा मातृशक्ति का ही पूजन और वंदन कर अपने मन में शक्तियों का संचय किया है। ब्रह्माकुमारीज़ जैसी आदर्श व्यवस्था से शक्ति को केन्द्रित कर हम जैसा चाहें वैसा कर सकते हैं। यह संस्था सृष्टि सृजन का कार्य कर रही है।

संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी ने कहा कि परिवर्तन तभी संभव होगा जब हम अपने अंदर झाँकेंगे, साथ ही शान्ति को अपनी शक्ति बनाएंगे। इससे स्वयं के परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू होगी। विनम्रता, सत्यता, दिव्यता, मधुरता और ज्ञान, योग, सेवा, धारणा जीवन में होंगे तो कदम-कदम में पदमों की कमाई होगी। भगवान की ताकत है, मेरा भाग्य है कि करनकरावनहार करा रहा है। खुशी जैसी खुराक नहीं। बाबा ने सिखाया है, मांगने से मरना भला।

महाराष्ट्र के पशुपालन एवं डेयरी मंत्री महादेव जानकर ने कहा कि सभी मंत्रियों को यहाँ ट्रेनिंग दी जाए तो भारत अच्छा बन जाएगा। शान्ति के लिए इस संस्था ने धर्म और विज्ञान का संगम किया है।

प्रख्यात वैज्ञानिक एवं सी.ई.पी.टी.ए.एम. के अध्यक्ष

ललित कुमार ने कहा कि विज्ञान में हम हर बात तर्क की कसौटी पर परखते हैं लेकिन आध्यात्मिकता का साक्षात्कार जिसको हो गया उसके पास अभिव्यक्ति के लिए न शब्द होंगे और न तर्क होंगे। विज्ञान की सीमा सिर्फ दिमाग तक है लेकिन अध्यात्म असीमित है। शिव की नृत्य भंगिमाओं और विज्ञान की पार्टिकुलेट थ्योरी में समानता है। स्पेस में यदि कोई आवाज है तो वह ओम् है।

वरिष्ठ पत्रकार राजीव रंजन नाग ने कहा कि ओम शान्ति मात्र दो शब्द हैं लेकिन दुनिया को आज इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है। आज दुनिया के देश हमारी संस्कृति को स्वीकार कर रहे हैं। यह दुनिया का एकमात्र ऐसा संगठन है जिसे मीडिया ने जगह दी है और यह भी लगातार मीडिया के संपर्क में है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि संस्था के 80 वर्ष के सेलिब्रेशन के कार्यक्रम सेवाकेंद्रों पर भी हों। आज मीडिया भटकता हुआ दिख रहा है क्योंकि व्यापारिक घरानों के बीच बंटवारा होता जा रहा है।

ब्रह्माकुमारीज़ रशिया के सेवाकेन्द्रों की क्षेत्रीय समन्वयक राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी चक्रधारी बहन ने कहा कि जब दुनिया अशान्ति के घोर अंधकार से घिर जाती है तो ऐसे समय में स्वयं परमपिता परमात्मा इस धरा पर आते हैं। परमात्मा कहते हैं, एक मुझसे नाता जोड़ लें तो सब दुखों से दूर हो जाएंगे।

श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (उड़ीसा) के कुलपति प्रो. राधामाधव दास ने कहा कि यहाँ बहुत ही सरल एवं स्वाभाविक रूप से कार्य हो रहे हैं। ये सीखने की बात है। आज दुनिया की सभी चीजों – प्रकृति से लेकर मनुष्य तक में शान्ति नहीं है।

'यूनाइटेड न्यूज न्यूयार्क' के संपादक डॉ. एम. एच. गजाली ने कहा कि दादा लेखराज ने जो शान्ति का मिशन शुरू किया है वो आज दुनिया में शान्ति का पैगाम दे रहा है। सिवाय भारत के दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं है जो विश्वगुरु बन सके। एक जर्नलिस्ट की आदत होती है सब जगह कमियाँ देखने की लेकिन मैं यहाँ कोई कमी नहीं ढूँढ़ पाया।

'छपते-छपते ताजा टी.वी.' के चीफ एडिटर एवं चेयरमैन बिसाभर नेवाड़ ने कहा, हमारा देश अध्यात्म का देश है। यहाँ इतनी शान्ति से जो संचालन हो रहा है वह बिना परमात्मा की शक्ति के संभव नहीं है।

जयुपर से पधारी ब्रह्माकुमारी सुषमा बहन ने सभा में विराजमान दस हजार से अधिक भाई-बहनों को राजयोग मेडिटेशन की कॉमेन्ट्री कराई, इसके फायदे बताए, सभी ने शान्ति की गहन अनुभूति की।

संस्था के साइंटिस्ट एवं इंजीनियरिंग विंग के नेशनल को-ऑर्डिनेटर ब्रह्माकुमार मोहन सिंघल ने स्वागत भाषण दिया। वहीं श्रीरंगम भरतनाट्यम त्रिची और त्रिमालय नाट्य चेन्नई की बालिकाओं ने खिली धरती, खिला आसमाँ... गीत पर आकर्षक प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के संयोजक ब्रह्माकुमार मृत्युंजय भाई ने अपने क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए वरिष्ठ पत्रकार राजीव रंजन, वैज्ञानिक ललित कुमार, डॉ. एम. एच. गजाली, न्यूज वर्ल्ड इंडिया के मैनेजिंग एडिटर अनिल राय, समाचार वार्ता के ग्रुप एडिटर राजीव निशाना का शॉल ओढ़ाकर, प्रशस्ति पत्र भेंट कर एवं शील्ड देकर सम्मान किया। इंजीनियर भरत भाई ने आभार व्यक्त किया।

रात्रि को मुम्बई बॉलीवुड से पधारे डांस ग्रुप ने मनमोहक प्रस्तुति देकर दर्शकों का मन मोह लिया। ❖

28 मार्च प्रात:कालीन सत्र

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के तीसरे दिन (28 मार्च) प्रात:कालीन सत्र में **गुजरात के राज्यपाल महामहिम ओ.पी.कोहली** ने कहा कि मूल्यनिष्ठ दृष्टिकोण के बिना समाज का परिवर्तन संभव नहीं है और ब्रह्माकुमारीज़ का मूल्यनिष्ठ आंदोलन अद्वितीय व बेमिसाल है। ब्रह्माकुमारीज एक सामाजिक परिवर्तन का आंदोलन है। राजनीतिक आंदोलन कराना आसान होता है लेकिन आध्यात्मिक आंदोलन की राह बहुत कठिन होती है। समाज को बदलने के इस आंदोलन को मैं नमन करता हूँ। राज्यपाल कोहली ने पर्यावरण, विज्ञान, आध्यात्मिकता और परंपराओं के संरक्षण, उनके पुनर्जीवन एवं स्त्री शिक्षा का समावेश करते हुए इसे जन आंदोलन का रूप देने की पैरवी की। उन्होंने बढ़ते हुए भौतिकवाद, अलगाववाद पर चिंता जताई। राज्यपाल कोहली ने कहा कि राष्ट्रीय आंदोलन के बाद आजादी तो मिल गई मगर 70 साल बाद भी सामाजिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का मजबूत आंदोलन खड़ा नहीं हो सका है। उपभोक्तावाद हर क्षेत्र में हावी हो गया। आज जरूरत है परमपिता के प्रकाश को महसूस करते हुए अपने जीवन को रूपांतरित करने की। परिवर्तन की यह शुरूआत परमपिता की सत्ता और उसमें असीम आस्था से ही हो सकती है। हम जिन्हें मूल्य कहते हैं, वे सब इसी पर आधारित हैं। व्यक्ति को यह समझने की मूल्यदृष्टि दी जाए कि वह किसे चुने, किसे नहीं चुने। भारत का समाज बेहतर व आध्यात्मिक बने, इसके लिए ऊँचे संस्कार और मूल्यों की शिक्षा जरूरी है। भौतिकवाद ने आधुनिकता से विमुख कर दिया है।

राज्यपाल कोहली ने स्वच्छता आंदोलन, बेटी बचाओ, नारी सशक्तिकरण आंदोलन और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता के लिए ब्रह्माकुमारीज़ का आभार जताया। उन्होंने कहा कि ये सभी प्रयास समाज को जीवन मूल्यों की पुनर्स्थापना की ओर ले जा रहे हैं। इससे ही विश्व परिवर्तन होगा। उन्होंने कहा कि भौतिकवाद के युग में हम प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण का अपने स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि विवेकपूर्ण इस्तेमाल करना सीखें। वसुधैव कुटुम्बकम की भावना की पुनर्स्थापना का प्रयास करें। समाज को बेहतर बनाना है तो जीवन में मूल्यों की पुनर्स्थापना करनी होगी।

अन्तर्राष्ट्रीय महाबोधी योगकेन्द्र लद्दाख के संस्थापक एच. एस. भीखू संगसेना ने कहा कि महिलाएँ जीवन के किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं हैं, यह ब्रह्माकुमारीज़ ने साबित कर दिया है। संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना कर दी। स्वर्ग और नर्क मस्तिष्क की ही अवस्थाएँ हैं। यहाँ आकर हम अद्‌भुत स्वर्ग की अनुभूति करते हैं।

हम सब बाहर खुशियाँ ढूँढ़ते हैं मगर यह हमारे भीतर ही छिपी हैं। एक कहानी के माध्यम से उन्होंने बताया कि भगवान ने लोगों की शिकायतों से तंग आकर खुद को लोगों के दिलों में छिपा लिया है, तब से लोग उन्हें ढूंढ़ रहे हैं। ब्रह्माकुमारीज में मैं उसी ईश्वर को ढूँढ़ने आया हूँ, देख रहा हूँ।

जम्मू-कश्मीर के विधानसभा अध्यक्ष कवीन्द्र

गुप्ता ने कहा, 80 वर्ष पहले जो पौधा लगाया था, आज वो वटवृक्ष बन गया है। हमारे जीवन में साधना के साथ शक्ति होनी जरूरी है। आज विश्व में भारत के प्रति सम्मान बढ़ा है। हमारी माताओं व शिक्षकों को राष्ट्र निर्माण में आगे आना होगा।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व अध्यक्ष न्यायाधीश वी. ईश्वरैय्या ने कहा, जो खुद को और खुदा को नहीं जानते हैं, वे ही नास्तिक हैं। खुद को जानने और आस्तिक बनाने का काम ब्रह्माकुमारीज़ कर रहा है। इस संस्था का संचालन स्वयं सर्वशक्तिमान, निराकार परमात्मा कर रहे हैं। परमात्मा तो अजन्मे, अभोक्ता हैं। वे प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के तन का आधार लेकर नई सतयुगी दुनिया की स्थापना का कार्य करते हैं। वर्तमान में इस संस्था के द्वारा नई दैवी दुनिया की स्थापना हो रही है।

रक्षा मंत्रालय के सलाहकार व पूर्व महानिदेशक, डी.आर.डी.ओ. व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार सारस्वत ने कहा कि मैं पूर्व राष्ट्रपति डॉ.अब्दुल कलाम के माध्यम से ब्रह्माकुमारीज के संपर्क में आया। उनके जीवन में साइंस और अध्यात्म का अद्‌भुत संयोजन था। हमने मानव मन पर अध्यात्म के प्रभाव का अध्ययन भी किया। आज दुनिया को अध्यात्म की बेहद जरूरत है।

पी.टी.सी.न्यूज के ग्रुप एडिटर शैलेष कुमार ने कहा कि पत्रकार के तौर पर मैंने धार्मिक संस्थाओं को नजदीक से देखा है। सच पूछो तो दुकान और बाजार ही दिखता है लेकिन यह संस्थान आज भी सिर्फ और सिर्फ सामाजिक संस्थान के रूप में है। मैं इसके लिए दादी जानकी को नमन करता हूँ। उन्होंने कहा, आने वाले 10-15 वर्षों में विश्व फिर युद्ध के मुहाने पर खड़ा होगा। ऊर्जा के नए स्रोत, पेट्रोलियम की जरूरतों को खत्म कर देंगे तो कुछ देशों में भयंकर हमले होंगे व अशांति का माहौल होगा तब शान्ति के संदेश की पूरे विश्व को जरूरत होगी।

दिशा टी.वी.की एम.डी.डॉ.अर्चिका दीदी ने कहा कि इस धरती पर जिया कैसे जाए, यह मनुष्य ने सीखा ही नहीं है। सुख-समृद्धि का आधार शान्ति है। शान्ति के बिना कुछ भी नहीं। इस समय मनुष्य को शान्ति की जरूरत है, वह मुसकराना भूल गया है। आगे बढ़ना चाहते हो तो शांत होना सीखो। वर्ल्ड ट्रांसफॉर्मेशन चाहते हैं तो इन्नर ट्रांसफॉर्मेशन शुरू कीजिए। चीजों को पकड़ कर मत बैठिये, माफ करना सीखिये। प्रतिदिन 24 घंटे में से खुद के लिए 24 मिनट जरूर निकालिए। बदलाव की शुरूआत स्वयं से करें। जो मिला है उसी में खुश रहें। मैं एक आत्मा हूँ, एक लाइट हूँ, यह निश्चय कर लें।

सब टी.वी. ग्रुप के वाइस चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर मार्कंडेय अधिकारी ने कहा, आज जहाँ परिवार की परिभाषा व परिधि दिनोंदिन सिमटती जा रही है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज परिवार की जितनी तारीफ की जाए, कम है। आज के वैश्विक वैचारिक संकट के दौर से बचाने में संस्था का प्रयास बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने आह्वान किया कि सभी पत्रकार व मीडिया, देश में जो कुछ अच्छा हो रहा है, उसे पॉजीटिव रूप में दिखाएँ ताकि लोगों के सामने एक उदाहरण पेश हो सके।

'गवर्नेंस नाउ' के निदेशक कैलाश अधिकारी ने कहा कि खुशी हमारे भीतर है जिसे आज व्यक्ति भूल चुका है। सांसारिक परेशानियों से समय निकाल कर आत्मचिंतन के लिए समय जरूर निकालें।

कार्यक्रम के आरंभ में रजनीराजा कलाक्षेत्रम् विजयनगरम की छात्राओं ने स्वागत नृत्य 'सत्यम, शिवम, सुंदरम्' प्रस्तुत किया। इसके बाद चेन्नई के ख्यातिप्राप्त गायक रामू महाराजापुरम ने गीत सुनाया। स्वागत भाषण शान्तिवन के चार्टर्ड एकाउंटेंट ब्रह्माकुमार ललित ने दिया। महासचिव राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई ने संस्थान के

80 वर्षों के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि बाबा ने शुरू से ही नारी शक्ति को आगे बढ़ाया। कार्यक्रम के दौरान यूथ विंग राष्ट्रीय संयोजिका ब्रह्माकुमारी चंद्रिका बहन ने सभी को राजयोग मेडिटेशन की अनुभूति कराई। मेडिकल विंग के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ.बनारसीलाल साह ने आभार जताया।

संस्था के कार्यकारी सचिव ब्रह्माकुमार मृत्युंजय भाई ने पी.टी.सी.न्यूज के ग्रुप एडिटर शैलेष कुमार, दिशा टी.वी.की एम.डी.डॉ.अर्चिका दीदी, सब टी.वी.ग्रुप के वाइस चेयरमैन व मैनेजिंग डायरेक्टर मार्कंडेय अधिकारी, गवर्नेंस नाउ के निदेशक कैलाश अधिकारी, टी.वी.टुडे की अपूर्वा मिश्रा को मीडिया के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया।

28 मार्च सायंकालीन सत्र

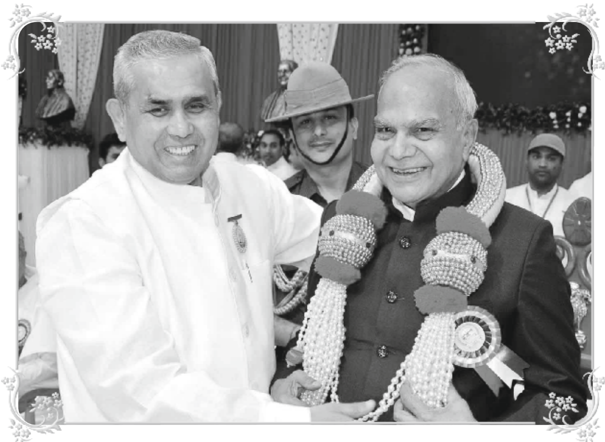

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के तीसरे दिन शाम के सत्र में **आसाम के राज्यपाल महामहिम बनवारी लाल पुरोहित** ने कहा, ''धर्म के नाम पर लोगों को बांटा जा रहा है। हमारी संस्कृति एवं वेद-ग्रंथों में कहीं जाति-धर्म का उल्लेख नहीं है। धर्म-जाति की दीवार टूटनी चाहिए। विश्व में कई संस्कृतियाँ आईं और चलीं गई लेकिन हमारी संस्कृति आज भी टिकी हुई है, इसका कारण धर्म है। ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय धर्म एवं संस्कृति की जड़ों को मजबूत एवं पोषित कर राष्ट्रनिर्माण का कार्य कर रहा है।'' उन्होंने एक घटना का जिक्र करते हुए कहा कि ईश्वर है, इसमें कोई शंका की बात नहीं है। प्रभु कृपा से ही सब संभव है। यहाँ के ज्ञान और आध्यात्मिकता को देखकर हमारी आँखें खुल गईं। धर्म के काम को ईश्वर का साथ रहता है। राज्यपाल ने महात्मा गांधी के यंग इंडिया अखबार में छपे लेख का जिक्र करते हुए उनके सात जीवन-मंत्र बताए। उन्होंने कहा कि राजनीति में धर्म का अंकुश होना बहुत जरूरी है। हमारे घर में मेहनत, ईमानदारी से कमाया हुआ धन ही आना चाहिए। हर एक के पास ज्ञान के साथ चरित्र होना चाहिए। मानवता के बिना विज्ञान अधूरा है।

नेपाल हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस मोहन बहादुर कार्की ने कहा कि मैं 30 सालों से संस्था से जुड़ा हूँ। आज लोगों के जीवन में धन-दौलत है लेकिन शांति नहीं है। शान्ति के लिए राजयोग के अलावा और कोई दूसरा उपाय नहीं है। एकमात्र राजयोग से ही शान्ति आ सकती है। यहाँ का सात दिन का कोर्स सभी को सीखना चाहिए। राजयोग के अभ्यास से हमारी जीवनशैली बदल जाती है।

एडिटर सिवेद साहनिया ने कहा कि यहाँ से शान्ति और प्रेम का संदेश दुनियाभर में दिया जा रहा है। ब्रह्माकुमारीज़ में जो परमात्म ज्ञान दिया जा रहा है, इससे निश्चित ही इन्सान में परिवर्तन होता है। यहाँ मैंने दो दिन रहकर शान्ति की अनुभूति की। साथ ही प्रेम और भाईचारा देखने को मिला।

लैम्बो ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज, हैदराबाद के चेयरमैन कोंडल राव ने कहा कि स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन होगा। ब्रह्माकुमारीज संस्था विश्व परिवर्तन का अद्भुत कार्य कर रही है। यह ज्ञान बहुत ही गहरा है। मैं इस संस्था से 25 वर्षों से जुड़ा हूँ। समाज में जो नेगेटिव विचार हैं उन्हें परिवर्तन करने में संस्थान लगा हुआ है।

सोशल सर्विस विंग के अध्यक्ष ब्रह्माकुमार अमीरचंद भाई ने कहा कि विश्व परिवर्तन संसार का शाश्वत नियम है जो इस समय परमात्म शक्ति के निर्देशन में ब्रह्माकुमारीज़ के माध्यम से किया जा रहा है। पवित्रता की शक्ति ही मूल शक्ति है जो इस विद्यालय की ओर सभी को खींच रही है। पवित्रता की शक्ति से ही शान्ति की स्थापना होगी। पहले जो लोग पवित्रता, ब्रह्मचर्य का विरोध करते थे, आज वही इसकी सराहना करने लगे हैं। इसी शक्ति के बल पर फिर से नई दुनिया बनेगी और विश्व परिवर्तन होगा।

मुंबई, मुलुंड की सबजोन इंचार्ज ब्रह्माकुमारी गोदावरी बहन ने कहा कि हमेशा ऐसा महसूस होता है कि परमात्मा कदम-कदम पर साथ चल रहा है। यह कार्य स्वयं परमपिता परमात्मा का है। इस यात्रा को आज 80 साल हो गए हैं। परमात्मा ने जीवन में इतनी खुशी और शान्ति भर दी है कि अब और कुछ पाना बाकी नहीं रह गया।

नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय बारीपदा के कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा ने संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी को डी.लिट की उपाधि प्रदान की। उन्होंने कहा कि दादी ने उड़ीसा में संदेशवाहक के रूप में लोगों में आध्यात्मिकता और प्रभु के संदेश का प्रचार-प्रसार किया है, जो बहुत ही सराहनीय है।

मेट्रो व मेघा टी.वी.चेयरमैन व एम.डी. के.जयप्रसाद, चौथी दुनिया के एडिटर संतोष भारतीय, एस. लाइव चैनल के ग्रुप एडिटर अजय दवे, वरिष्ठ पत्रकार भव्य श्रीवास्तव को मीडिया के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान पर लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। साथ ही नेपाल हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस मोहन बहादुर कार्की, नॉर्थ उड़ीसा विश्वविद्यालय बारीपदा के कुलपति प्रो. प्रफुल्ल कुमार मिश्रा, अभिनेता जीतू वर्मा का भी सम्मान किया गया।

शाम के सत्र में तामिलनाडु से आई सिंगर एस.जे.लैनी ने 'वो मेरा बाबा है...' स्वागत गीत प्रस्तुत किया। बेलगाम के डिवाइन एंजिल ग्रुप ने सत्यम, शिवम सुंदरम नृत्य की प्रस्तुति से सभी का मन मोह लिया। स्वागत भाषण एडवोकेट ब्रह्माकुमारी लता बहन ने दिया। मंच संचालन दिल्ली की ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन ने किया। राजयोग की दिव्य व गहन अनुभूति ज्ञान सरोवर की ब्रह्माकुमारी सुमन बहन ने कराई। पीस न्यूज के न्यूज एडिटर एवं संस्था के पी.आर.ओ. ब्रह्माकुमार कोमल भाई ने सभी का आभार माना। ❖

29 मार्च प्रातःकालीन सत्र

अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के चौथे दिन **भारत में नेपाल के राजदूत दीपकुमार उपाध्याय** ने कहा, ब्रह्माकुमारीज़ पूरे विश्व के लोगों को शान्ति और शक्ति के साथ जीवन जीने की कला सिखा रही हैं। यह अलौकिक और अद्भुत कार्य है। विपरीत परिस्थितियों में स्थितप्रज्ञ होने और मन को स्थिर रखने की संस्था की सीख स्वस्थ और सफल जीवन का आधार है। इस सामाजिक आंदोलन को उत्तरोत्तर समर्थन मिल रहा है। शीघ्र ही यह विश्वभर में जीवन जीने का आंदोलन बन जाएगा। संस्थान के प्रति बार-बार कृतज्ञता जताते हुए उन्होंने कहा कि शान्ति की स्थापना पीड़ित मानवता की सबसे बड़ी सेवा है। विश्व के सभी धार्मिक-सामाजिक संगठनों पर अंगुली उठती रही है मगर ब्रह्माकुमारीज़ एक ऐसा संगठन है जिस पर कभी कोई अंगुली नहीं उठी। यह एक ऐसा मत है जिसमें न कोई छोटा है, न बड़ा। भारत-नेपाल के बीच संस्कृति व सभ्यता का संबंध है।

नेपाल के सांसद भीमसेनदास प्रधान ने कहा कि यह एकमात्र ऐसा संगठन है जहाँ धर्मनिरपेक्षता के आधार पर चरित्र का निर्माण किया जाता है। यहाँ से जुड़ने के बाद जीवन में सुख-शान्ति आ जाती है। यह विश्व शान्ति और आत्म शान्ति के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। संस्था बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है।

समाचारवार्ता के ग्रुप एडिटर राजीव निशाना ने कहा कि आज शान्ति की सबसे ज्यादा जरूरत पत्रकारिता जगत को है। पत्रकारों और पत्रकारिता का कोर्स कर रहे विद्यार्थियों को राजयोग का प्रशिक्षण दिया जाए ताकि वे खुद जीवन जीने की कला सीख सकें और नकारात्मक विचारों से परहेज करें। पत्रकारिता में आ गई बुराइयों से खुद दूर रहें और समाज को भी सकारात्मक खबरों से प्रशिक्षित करें। यहाँ देशभर के सभी पत्रकारों को एक बार जरूर आना चाहिए।

वी.एन.आई. के मुख्य संपादक वदूद साजिद ने कहा कि 'अस्सलाम वालेकुम' और ओमशान्ति एक ही शब्द है। शान्ति...शान्ति और शान्ति...। साजिद ने कहा कि हजरत मोहम्मद साहब कहते थे, पूरी कायनात हमारी है... तो ब्रह्माकुमारीज़ अपने शान्ति व राजयोग के मंत्र से इसी को साकार कर रही हैं। यहाँ सभी सुप्रीम गॉड के बच्चे हैं। पूरे विश्व में सेवाएँ दे रहे हैं। एक और दृष्टांत में कहा कि मोहम्मद साहब की बेटी फातिमा जब आती थीं तो वे उठकर अपना बिछौना उन्हें दे देते थे। इसी तरह यहाँ पर भी नारी सशक्तिकरण का संदेश दिया जा रहा है। जो काम करोड़ों लोगों को करना था, वो संस्था ने अपने दम पर कर दिखाया है। भारत जैसी सुपर स्प्रिचुअल पावर कहीं नहीं, जहाँ ब्रह्माकुमारीज जैसा सामाजिक आंदोलन काम कर रहा है।

इमामिया एजुकेशन ट्रस्ट के अध्यक्ष नवाब जफर मीर अब्दुल्लाह ने कहा कि हम लोग जन्नत, हेविन के बारे में कल्पना करते हैं लेकिन मैंने यहाँ ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू में जन्नत को देखा है। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर शान्ति, प्रेम, सहयोग की भावना और रौनक

देखने को मिली। यहाँ से दुनिया में इंसानियत का पैगाम दिया जा रहा है। इस्लाम के पाँच मुख्य सिद्धांत और ब्रह्माकुमारीज़ के कार्य में समानता दिखती है।

वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक राजयोगी सूरज भाई ने कहा कि इसी स्टेज पर परमात्मा का दिव्य अवतरण होता है। इससे चारों ओर शुभ व सकारात्मक वायब्रेशन की अनुभूति सभी को होती है। इस स्थान पर वही व्यक्ति आता है जिसके भाग्य में होता है। जो देवकुल की आत्माएँ हैं और भाग्यवान आत्माएँ हैं वही यहाँ पहुँचती हैं। राजनीति और अध्यात्म के जोड़ से ही भारत फिर से विश्वगुरु बनेगा। अपने चित्त, मन को आध्यात्मिकता से भरते चलें तो जीवन आनंदमय बन जाएगा।

बिहार की जोनल इंचार्ज राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी रानी बहन ने कहा कि मैं 60 वर्षों से ब्रह्माकुमारीज में समर्पित हूँ लेकिन मुझे कभी भी जीवन में कठिनाई नहीं आई। बाबा शान्ति से जीवन चला रहा है। मनुष्य ने आज भौतिक साधनों का विकास किया है लेकिन साधना छोड़ दी है, इससे अशान्ति फैल गई है। जीवन में सुख-शान्ति व खुशहाली राजयोग से ही संभव है।

सुरक्षा सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्रह्माकुमारी शुक्ला बहन ने कहा कि आध्यात्मिक चेतना से ही श्रेष्ठ संस्कारों का निर्माण संभव है। ज्ञान प्रकाश, योग का विस्तार और कर्म में निखार हो तो जीवन सहज बन जाएगा। स्वचिंतन, परमात्म चिंतन व सद्गुण ही श्रेष्ठ जीवन का आधार हैं। ज्ञान, इच्छाशक्ति और परिवर्तन की कला से ही श्रेष्ठ जीवन बनेगा। हमें सदा ज्ञान नेत्र जागृत रखना चाहिए। इसके बिना शक्तियों का संचार नहीं हो सकता है। ज्ञान, योग और पवित्रता के बल के बिना सकारात्मक चिंतन व संसार में परिवर्तन संभव नहीं है। स्वचिंतन ही परिवर्तन की कला है।

महिला प्रभाग की मुख्यालय संयोजिका ब्रह्माकुमारी सविता बहन ने कहा कि यदि आप जीवन में लेते रहेंगे तो यह खारा हो जाएगा। इसलिए देने का भाव भी रखें। राजयोग से जीवन का परिवर्तन हो जाता है। राजयोग के माध्यम से ईर्ष्या, क्रोध, नफरत, द्वेष, नकारात्मकता आदि से छुटकारा पाकर जीवन में परिवर्तन लाया जा सकता है। आवश्यकता से अधिक जो हमारे पास है वह विष है। किसी की अच्छाई को अस्वीकार करना ईर्ष्या है। वहीं उसे स्वीकार करना प्रेरणा है। जो जैसा है उसे स्वीकार करना प्रेम है, वहीं उसे अस्वीकार करना नफरत है। आध्यात्मिकता वह दर्पण है जिससे हम स्वयं में परिवर्तन लाते हैं।

कार्यक्रम के शुभारंभ में श्रीलंका से आई बालिका बी. खुशी ने 'श्रीरामचंद्र कृपालु भज मन...' पर आकर्षक नृत्य पेश किया, जिसे देख हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। चेन्नई के रामू महाराजपुरम ने स्वागत गीत, 'जिन्हें ढूँढ़ते थे हम दर-दर, वो भगवान आ पधारे हैं...'की प्रस्तुति दी। श्रीरंगम भरत नाट्यालय त्रिचि की बालिकाओं ने स्वागत मयूर नृत्य की प्रस्तुति दी। अतिथियों का सम्मान संस्था के कार्यकारी सचिव ब्रह्माकुमार मृत्युंजय भाई ने स्मृति चिह्न, पुष्पगुच्छ एवं माला पहनाकर किया। मंच संचालन जयपुर की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्रह्माकुमारी चंद्रकला बहन ने किया। गॉडलीवुड स्टूडियो के निदेशक हरिलाल भाई ने सभी का आभार माना।

महोत्सव के तहत मंगलवार देर रात डायमंड हॉल में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इसमें देश के

विभिन्न हिस्सों से आए कलाकारों ने एक से बढ़कर एक आकर्षक प्रस्तुति दी। मुंबई से आए कलाकारों ने संस्थान के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की जीवनी पर नाटक का मंचन किया। इसके माध्यम से प्रतिभागियों को जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया।

29 मार्च सायंकालीन सत्र

चार दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के समापन अवसर (29 मार्च सायं) पर **चौथी दुनिया के एडिटर संतोष भारतीय** ने प्रस्ताव रखा कि माउंट आबू को हिंसा और शराब से मुक्त क्षेत्र बनाकर आध्यात्मिक नगर घोषित किया जाए। यहाँ प्राकृतिक तौर पर ऐसा वातावरण बने कि इसे देश-दुनिया के आध्यात्मिक नगर के नाम से जाना जाए। सभा में मौजूद दस हजार से अधिक लोगों ने इस प्रस्ताव पर ताली बजाकर समर्थन दिया। इस प्रस्ताव का **केन्द्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्यमंत्री रामदास बंदु आठवले** ने समर्थन करते हुए इसे भारत सरकार से पास कराने में हर संभव मदद का आश्वासन दिया। वहीं संस्था के कार्यकारी सचिव ब्रह्माकुमार मृत्यंजय भाई ने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से इसे पूरा करने की मांग की। साथ ही विश्वास दिलाया कि हम माउण्ट आबू की, विश्व की आध्यात्मिक नगरी के रूप में पहचान बनाएँगे।

आठवले ने कहा कि इस संस्था द्वारा मानव को मानव बनाने, महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, पर्यावरण बचाओ आदि समाजसेवा के आंदोलन चलाए जा रहे हैं जो बहुत ही सराहनीय कदम हैं। मेडिटेशन से मन की शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। आदमी को आदमी बनाना साधारण कार्य नहीं, बड़ा काम है।

पुडुचेरी की उपराज्यपाल महामहिम किरण बेदी ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि मेरी दादी सिख परिवार से हैं और नाना हिंदू परिवार से हैं। जब मैं पुलिस में सेवा का फॉर्म भर रही थी तो उसमें एक कॉलम आया रिलीजियस (धर्म) का, तो मैंने उसमें ह्यूमीनिटी (मानवता) भरा। मेरा यह जवाब ही मुझे पुलिस सर्विस में लाया क्योंकि इन्सान को सबसे पहले एक अच्छा इन्सान बनना चाहिए।

किरण बेदी ने तिहाड़ जेल का अनुभव सुनाते हुए कहा कि वहाँ ब्रह्माकुमारी बहनों ने जब राजयोग का प्रशिक्षण दिया तो कई कैदियों की बुराई की आदत छूट गई। कई बंदियों ने द्वेष भावना छोड़ दी, लड़ना-झगड़ना छोड़ दिया और सकारात्मकता की ओर बढ़ने लगे। ब्रह्माकुमारी भाई-बहनें हमेशा ईमानदारी, सच्चाई, सफाई, पवित्रता और सेवाभाव के साथ मानवता की सेवा के लिए खड़े रहते हैं। उन्होंने कहा कि मुझे जहाँ-जहाँ सफलता मिली, इसमें आपका ही आशीर्वाद रहा है। मैं मानवता और ईश्वरीय शक्ति में विश्वास करती हूँ।

उपराज्यपाल बेदी ने कहा कि प्रतिस्पर्धा के चलते आज हमारे लड़के-लड़कियाँ तनाव में जी रहे हैं। पहले उन्हें एक अच्छा इन्सान बनाएँ। इंसानियत की हर व्यक्ति को जरूरत है।

मैसूर की ब्रह्माकुमारी लक्ष्मी बहन ने कहा कि यहाँ के ज्ञान से तन और मन के विचारों की सफाई हो जाती है। ब्रह्मा

बाबा और दादियों की अथक मेहनत और परिश्रम से ही संस्था इतनी ऊँचाइयों की ओर जा रही है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में प्रैक्टिकल में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से सभी धर्म-संप्रदाय के लोगों का आदर-सत्कार किया जाता है। यहाँ से कई लोगों का जीवन पूरी तरह से बदल गया है।

बोरीवली, मुंबई की ब्रह्माकुमारी दिव्या बहन ने कहा कि सत्यता से दूर जाने पर कभी जीवन में सुख नहीं हो सकता। अब परमात्मा कहते हैं, तुम मेरे लाडले बच्चे, मीठे बच्चे, सिकीलधे बच्चे हो। आध्यात्मिकता से हमारे संकल्प बदल जाते हैं। जब हम परमात्मा के समीप जाते हैं तो हमें सत्यता की शक्ति मिलती है। अपने संकल्पों के संसार को बदलो तो यह संसार बदल जाएगा।

लोट्स मंदिर बहाई कम्यूनिटी ऑफ इंडिया के नेशनल ट्रस्टी एवं जनरल सेक्रेटरी डॉ.ए.के. मर्चेंट ने कहा कि आज हमारे सामने पाँच प्रमुख समस्याएँ हैं – जलवायु परिवर्तन, आर्थिक समस्या, परमाणु हथियार, मानव अधिकार, संसाधनों का गलत दोहन। इनके बचाव के लिए हमें मिलकर काम करना होगा। हम सब एक ही पेड़ के फूल हैं और समस्त पृथ्वी एक देश है।

इंडिया वन सोलार थर्मल पावर प्रोजेक्ट के हैड ब्रह्माकुमार गोलो पिल्ज ने कहा कि यहाँ के मेडिटेशन से मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया। हमारा मकसद अध्यात्म और विज्ञान के बीच समन्वय बनाना है। ब्रह्माकुमारीज में ये इनोवेटिव पावर प्लांट भारत एवं जर्मनी की सरकार के सहयोग से लगाया गया है। ये प्रोजेक्ट देश के अंदर ऊर्जा की बचत के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध होगा। यहाँ 25 से अधिक एनर्जी प्रोजेक्ट पर रिसर्च किया जा रहा है। मैंने एक पुस्तक भी लिखी है जिसमें ऊर्जा की बचत के उपाय बताए गए हैं।

महाराष्ट्र जोन की निदेशिका ब्रह्माकुमारी संतोष बहन ने कहा कि परमात्मा ने जब ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कार कराया और आदेश दिया कि तुम्हें नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना करनी है तो वे तुरंत अपना धन-दौलत छोड़ इस कार्य में लग गए। जब तक हम खुद का परिवर्तन नहीं कर सकते तब तक विश्व का परिवर्तन नहीं कर सकते। स्वयं के परिवर्तन का आधार हमारे विचार और दृष्टिकोण हैं। ब्रह्मा बाबा विश्व की सभी आत्माओं के पिता हैं। जो उनसे संबंध जोड़ लेता है वह ब्रह्माकुमार और ब्रह्माकुमारी बन जाता है। विचारों का परिवर्तन करने के लिए जो शक्ति चाहिए वह यहाँ सिखाई जाती है।

चार दिवसीय कार्यक्रम के अंतिम सत्र की शुरूआत मधुरवाणी ग्रुप द्वारा गाए गीत 'ये बधाई की वेला शुभारम्भ है, ये समापन नहीं शुभारंभ है... ' द्वारा हुई। स्वागत भाषण डिस्टेंस एजुकेशन प्रोग्राम के निदेशक ब्रह्माकुमार डॉ. पांड्यामणि भाई ने दिया। जयपुर की ब्रह्माकुमारी पूनम बहन ने राजयोग मेडिटेशन की अनुभूति कराई। रजनीराधा कलाक्षेत्ररम विजयनगरम की बालिकाओं ने स्वागत नृत्य पेश किया। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा किये जा रहे सामाजिक कार्यों से संबंधित 'प्रेरणा' पुस्तक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। ❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है।

सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें:

डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान। मोबाइल: 09413240131

फोन: (02974) 238347/48/49 वेबसाइट: www.ghrc-abu.com

फैक्स: (02974) 238570 ई-मेल: drmurlidharsharma@gmail.com

श्रद्धांजलि

प्यारे बापदादा और सर्व दैवी परिवार की अति स्नेही, मधुबन में पिछले 34 वर्षों से समर्पित रूप से अपनी सेवायें देने वाली पंकजा बहन कुछ समय से बीमार थी। आपको 6 अप्रैल को ग्लोबल हॉस्पिटल से अहमदाबाद स्टर्लिंग हॉस्पिटल में लेकर गये, वहाँ इलाज शुरू किया गया। आपको पेट में तकलीफ थी, सांस लेने में भी काफी दिक्कत आ रही थी।

सात अप्रैल, 2017 शुक्रवार को रात्रि 9 बजे आप अपना पुराना शरीर छोड़ बापदादा की गोद में चली गई। आपके शरीर की आयु 67 वर्ष थी, आप कर्नाटक की रहने वाली थी। आपने बहुत अथक बनकर मधुबन महायज्ञ की अनेक सेवाओं में अपना सक्रिय योगदान दिया। जब पहली इन्टरनेशनल कान्फ्रेन्स 1983 में ओम्शान्ति भवन में आयोजित हुई तब से आपने टेलीफोन एक्सचेंज में टी.पी. के माध्यम से समाचार भेजने की सेवायें शुरू की। अभी आप ईशु दादी के साथ भी अपना सहयोग देती थी, इसके साथ बाबा को भोग लगाने की भी सेवा बहुत प्यार से करती थी, साथ-साथ मधुबन में आने वाले भाई-बहनों का भी विशेष ध्यान रखती थी। आपका सभी से स्नेह था। ऐसी स्नेही आत्मा को पूरा दैवी परिवार अपने स्नेह सुमन अर्पित करता है।

ओमशान्ति के अर्थ में टिककर

ब्रह्माकुमारी वीरबाला, लखनऊ

ओमशान्ति के अर्थ में टिककर, मन की डांस बढ़ाओ।
मन के मौन की आदत डालो, मुख के शब्द घटाओ।।

ओमशान्ति नित अन्तर्मन में, शान्ति लहर फैलाती है।
बाबा-सा आनन्द, प्रेम का, सागर बन लहराती है।।

ओमशान्ति का अर्थ फैलता, दिल के इस आँगन में।
खुशियों के रंग भर देता है, मानव के जीवन में।।

सभी मगन मन झूम रहे हैं, ओमशान्ति के अर्थ में टिककर।
बिना साज, संगीत बन रहा, ओमशान्ति की धुन में मिलकर।।

ओमशान्ति है मन की भाषा, मन से मन की बात हो रही।
आपस में हम बात कर रहे, बाबा से भी बात हो रही।।

ओमशान्ति की रिमझिम में, मन-मयूर यह नाच रहा है।
ज्ञान-योग के पंख खुल गये, भेद स्वयं का जान गया है।।

ओमशान्ति की रास, मगन सब, बाहर की आवाज नहीं है।
कानों में फिर भी शिव की, मधुर मुरलिया गूँज रही है।।

ओमशान्ति के रस में डूबे, अव्यक्त मिलन सब मना रहे हैं।
देह भान से ऊपर उठकर, परम ज्योति में समा रहे हैं।।

ओमशान्ति की शमा जल उठी, मन मन्दिर में हुआ उजाला।
प्रभु प्यार में प्रमुदित होकर, ज्ञान-योग का पीते प्याला।।

मन में भी हो ओमशान्ति, जीवन में भी ओमशान्ति।
शान्त स्वरूप आत्मा हूँ मैं, मुख में भी हो ओमशान्ति।।

शान्ति सागर पिता है मेरा, शान्ति की किरणें फैलाता।
मैं शान्तिधाम की रहने वाली, परमधाम से मेरा नाता।।

‘पत्र’ संपादक के नाम

फरवरी, 2017 अंक में प्रकाशित ‘ज्ञान-प्रकाश से नरसंहार टला’ बहुत अच्छा लगा। उससे हिम्मते बच्चे, मददे बाप की शिक्षा याद आयी। यह लेख न होता तो पता ही नहीं चलता कि बोल से संहार टलता है। दूसरा ‘आओ अब कुमार-कुमारी बचाओ अभियान का आरम्भ करें’ लेख पढ़कर मालूम हुआ कि मोबाइल आदि ज्यादा यूज करने के बजाय सेवाकेन्द्र के वातावरण से स्थिति बनेगी। बहुत ही विस्तार से समझाया है। – **ब्र.कु. नितिन, रायगढ़**

31 मई, विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर विशेष...

व्यसनों के कारण और निवारण

ब्रह्माकुमार विपिन गुप्ता, टीकमगढ़ (म.प्र.)

सदियों से मानव समाज का एक बड़ा वर्ग व्यसनों के अधीन रहा है और यह अधीनता आज अधिक विस्तृत और विकृत रूप में विश्व में प्रत्यक्ष है। व्यसनों से हुई बर्बादी और दुर्दशा के अनगिनत उदाहरण देख लेने या भुगत लेने के बावजूद भी क्या वजह है कि व्यसनों के अधीन मानव इन्हें छोड़ते नहीं हैं अथवा जो इनसे मुक्त हैं, सब कुछ जानते हुए भी वे इन्हें अपना लेते हैं। शासन-प्रशासन व सामाजिक तंत्रों के द्वारा व्यसनों के दुष्परिणामों से लोगों को अवगत कराने के कई अभियान चलाए जाते हैं परंतु आंशिक लाभ मिलते हैं। व्यसन-भोगियों को यदि व्यसनों की हानियाँ समझाई जाएँ तो वे बातों को उबाऊ भाषण की तरह भुला देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्यसनों के दुष्परिणामों के ज्ञान का कोई अभाव नहीं है परन्तु कुछ निजी कमियों व कमजोरियों का अज्ञान ही इस गुलामी का कारण बना हुआ है। उन पर विचार करके ही व्यक्ति इन व्यसनों से मुक्त हो सकता है। मुख्य 4 कारणों के रूप में वे कमियाँ समाज में युवाओं और यहाँ तक कि महिला वर्ग व कुमारियों में भी देखी जा रही हैं। वे चार मुख्य कारण हैं, 1. खालीपन; 2.कुसंग; 3.कमजोरियाँ (मानसिक); 4.कुतर्क।

खालीपन

यह एक बहुत बड़ा कारण बनता है व्यसनों को अपनाने का। मनोविज्ञान का नियम है कि व्यक्ति सुखी होकर सालों जी सकता है, दुख में भी आशा के साथ वर्षों बिता सकता है लेकिन बोरियत में, ऊब व नीरसता में बिताया हुआ एक दिन भी उसे महीनों जैसा भारी लगता है। इस खालीपन का कारण होता है अच्छे चिंतन की कमी, जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य का निर्धारित न होना, नवीन पुरुषार्थों व रचनात्मक प्रवृत्तियों का न होना अथवा अच्छे माहौल की कमी। इसमें खासकर युवा, जो तन-मन की शक्ति से भरे हुए होते हैं, सही दिशा के अभाव में बोरियत का अनुभव करने लगते हैं और फिर रोमांच की तलाश में व्यसनों को सहज साधन के रूप में अपना लेते हैं।

कुसंग

कुसंग जीवन का एक बुरा दौर है जो अच्छे से अच्छे जीवन-यात्री की राह और मंज़िल बदल देता है। कुसंग में फँसे व्यक्ति, खासकर युवा, अपने दोस्तों को खुश करने के लिए, अपने को बिंदास व बालिग दिखाने के लिए या कुसंगति का झूठा मज़ा लेने के भ्रम में ये शौक अपना लेते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि ये मित्र, जो आज सगे भाई जैसा अपनापन दिखा रहे हैं और अपने खर्चे पर व्यसन उपलब्ध करा रहे हैं, केवल कुसंग में रंगने के लिए ऐसा कर रहे हैं कि आप एक बार हमारे जैसे बन तो जाओ, बाद में आपका समय, पैसा और सब कुछ स्वत: हमारा हो जाएगा। मानव की यह तुच्छ मानसिकता है कि वह दूसरे को भी अपनी तरफ नीचे खींच लेना चाहता है ताकि स्वयं के अहम् को संतुष्ट कर सके और अपनी बुराई की ग्लानि को छिपा सके कि मात्र मैं ही ऐसा नहीं हूँ। किसी आदर्श व्यक्ति की तरह बनने की बजाय दूसरे को अपने जैसा बनाने की बात ज्यादा सरल लगती है। परन्तु उनका यह स्वार्थ, ऐसे कई युवाओं का भविष्य अंधकारमय बना देता है जिनका अभी स्वर्णकाल है। ऐसी संगति में जाने से पहले युवा ये जान लें कि कुसंग का क्षणिक आकर्षण व झूठी वाहवाही बर्बाद तो कर देगी पर बर्बाद होने के बाद आबाद करने ये कुसंगी फिर कभी नहीं आयेंगे। नशे से बर्बाद व्यक्ति का कोई मित्र उसकी बीमारी व गरीबी का सहारा बनने नहीं आता। हजार कुसंगी मित्रों से, मित्रों का न होना अच्छा है। अपने मित्र स्वयं बन जाएँ, अपनी अच्छी सोच व लक्ष्य की लगन से मित्रता करें, भगवान से मित्रता करें।

कमज़ोरियाँ

व्यक्ति मानसिक रूप से कितना सशक्त व साहसी है, इसका पता समस्याओं के आने पर ही चलता है। जीवन की कोई असफलता, विरोध, अपमान या दुर्घटना कई बार व्यक्ति को घायल कर देती है, वह दुख उसे पहाड़ जैसा दिखाई देता है। उस दुख को जीत न पाने की स्थिति में वह व्यसनों का सहारा ले लेता है। यह एक मानसिक कमज़ोरी है। क्या शेर के सामने खड़ा शिकार आँखें बंद कर ले तो शेर गायब हो जाएगा? नहीं बल्कि उसका शिकार और भी सहजता से हो जाएगा। परिस्थितियों का सामना न कर पाने पर जो लोग नशे को अपनाते हैं, उनकी परिस्थितियाँ समाप्त नहीं होतीं, बस, नशे में कुछ देर के लिए समस्या भूल कर वे अपने को मुक्त महसूस करते हैं। पर होश आने पर लोगों के सामने हुई शर्मिंदगी और यथावत् समस्या के दबाव को भुलाने के लिए और ही ज्यादा नशे में डूब जाते हैं। आवश्यकता थी अनुभवियों से ज्ञान-मार्गदर्शन लेने की, अच्छे चिंतन से अपने में विश्वास जगाए रखने की, धैर्य और मेहनत की, परमात्मा की याद से आत्मबल बढ़ाने की परन्तु तरीका अपनाया गया, बड़ी समस्या का निर्माण कर, छोटी समस्या मिटाने का। तो संकल्प करें स्वयं को शक्तिशाली बनाने का। प्यासा पानी ढूँढ ही लेता है और जिज्ञासु ज्ञान और समाधान।

कुतर्क

ऊपर दिए गए कारणों में यह कारण (कुतर्क) ऐसा है जिसका सबसे ज्यादा दोष स्वयं व्यक्ति पर होता है क्योंकि इस कारण के पीछे परिस्थिति का दबाव नहीं है। कई बार गलती को समझते हुए भी अपने शौक के लिए व्यक्ति कुतर्क को ढाल बनाता है। मसलन वो कहता है कि आप हमें समझाते हो कि व्यसनों से रोग और अपराध बढ़ते हैं लेकिन अमुक व्यक्ति तो सुपारी का दाना भी नहीं लेता था परन्तु फिर भी अल्पायु में ही हार्टफेल से मर गया या उसे कैंसर हो गया। मैं नशा करता हूँ पर किसी का बुरा नहीं करता। अमुक व्यक्ति तो बड़ा धार्मिक बनता है लेकिन उसके कर्म बड़े ही बेईमानी वाले हैं। समझने की बात है कि नशों के अलावा भी बीमारियों के कई अन्य कारण होते हैं। अपनी अच्छाई का हवाला देकर, अपनी बुराई को सही ठहरा देना कहाँ उचित है? कई कहते हैं, यह हमारा व्यक्तिगत मामला है पर कैसे? सिगरेट का जो धुआँ आप हवा में छोड़ते हैं, वह दूसरों की श्वासों में न पहुँचे, क्या यह आपके हाथ में है? तंबाकू खाकर आप जो जगह-जगह पर थूकते हैं, क्या वे दाग आप खुद धोते हैं? शराब की जो दुर्गंध आपके मुँह से आती है, क्या आप उसे फैलने से रोक लेते हैं? व्यसनों से मिलने वाले दुख व ग्लानि से क्या परिजनों को बचा लेते हैं? क्या इस शरीर (प्रकृति की अनुपम देन) की संभाल करना आपका व्यक्तिगत कर्त्तव्य नहीं है? तो कुतर्कों का धोखा स्वयं को न दें, नहीं तो ये आत्मग्लानि और पश्चाताप का कारण बनेंगे। कोई कहते हैं कि ये चीज़ें भगवान ने बनाई ही क्यों? इसका उत्तर ईश्वर प्रदत्त ज्ञान द्वारा मिलता है कि ये व्यसन परमात्मा ने बनाए ही नहीं बल्कि इनकी रचना हमारी तृष्णाओं व इच्छाओं के कारण प्रकृति में स्वत: होती हैं। फिर हम इन्हें अपनाते हैं। सतयुग में तंबाकू आदि नशीले पदार्थ पैदा ही नहीं होते क्योंकि वहाँ दैवी संस्कृति है और देवताओं की सभी इच्छाएँ पूर्ण सात्विक एवं नियंत्रित होती हैं। मध्यकाल में विकारों की प्रवेशता के कारण जगने वाली तामसी इच्छाओं के आकर्षण से ही प्रकृति में भी तामसी पदार्थ पैदा होने शुरू होते हैं और फिर हम इन्हें अपनाते तो स्वेच्छा से ही हैं न!

जगाएँ स्वाभिमान को

हमने कभी भी यह नहीं सुना होगा कि किसी जानवर ने जिंदगी से परेशान होकर खुदकुशी कर ली। बीमार से बीमार जानवर, अति कष्ट में होते हुए भी सामने आती ट्रेन देखकर पटरी से उतर जाता है और बुद्धिजीवी इंसान जानबूझ कर पटरी पर लेट जाता है। यह दर्शाता है कि जानवर दुख का सामना करना और सहन करना – दोनों जानते हैं। इसके लिए उन्हें नशे की ज़रूरत नहीं जबकि

(शेष..पृष्ठ 34 पर)

जगदीश भाई कहते थे,

ईश्वरीय ज्ञान के लिए बुद्धि हो शुद्ध, एकाग्र और शान्त

ब्रह्माकुमारी प्रभा, पीतमपुरा (दिल्ली)

ब्रह्माकुमारी प्रभा बहन, पीतमपुरा सेवाकेन्द्र (शक्तिनगर, दिल्ली) की निमित्त संचालिका हैं। आपने भ्राता जगदीश चन्द्र जी के साथ 18 सालों तक शक्तिनगर सेवाकेन्द्र में रहकर ईश्वरीय सेवाएँ कीं और बहुत कुछ सीखने का सुअवसर प्राप्त किया। प्रस्तुत कर रही हैं आप भ्राता जी के महान प्रेरणादायी जीवन के संस्मरण...

बाबा ने मुरली में कहा है कि अगर घृणा और दुश्मनी होगी तो ये अग्नि ज्ञान को भस्म कर देगी। इसी विषय पर जगदीश भाई ने एक बार सुनाया था –

दुश्मन हैं पाँच विकार, न कि कोई व्यक्ति

तुम्हारे दुश्मन कोई व्यक्ति नहीं हैं। जब तक यह नहीं समझा है कि हमारे दुश्मन व्यक्ति नहीं हैं बल्कि पाँच विकार हैं तब तक बाबा की याद निरन्तर हो नहीं सकती। हमने जो बुरे कर्म किये हैं वो हमारे सामने पेश आयेंगे। अगर हमने कोई भी गलत अथवा उल्टा काम किया ही नहीं है तो कोई हमारा कुछ बिगाड़ ही नहीं सकता। कैसी भी परिस्थिति हो उसमें सही निकलेंगे, भगवान (बाबा) हमारी मदद करेंगे। हमारे नुकसान के लिए कोई भी निमित्त बना हो लेकिन असल में उस नुकसान का कारण हमारे बुरे कर्म हैं इसलिए दुश्मन हैं बुराई और विकार। आज एक निमित्त बना, कल दूसरे प्रकार के नुकसान के लिए कोई दूसरा भी निमित्त बन सकता है। इसलिए हमारे अन्दर सबके प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना होनी चाहिए। हमें यही सोचना है कि हरेक का भला हो, हरेक का अच्छा हो। कर भला तो हो भला। यह हमारे जीवन का बुनियादी असूल होना चाहिए। हम यह दृढ़ निश्चय करें कि हमें किसी के बारे में स्वप्न मात्र में भी बुरा नहीं सोचना है। बुरा सोचना माना दुख देना।

आखिरी प्रश्न है नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा बनना

जिसके प्रति घृणा और दुश्मनी होगी उसकी याद आती है, वैसे ही जिसके प्रति मोह होता है उसकी भी याद आती है। इसलिए ही बाबा कहते, नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा। यह हमारे पेपर का आखिरी प्रश्न है, इसमें हमें पास होना है। नष्टोमोहा के साथ-साथ नष्टोघृणा भी हो जायें तब स्मृतिलब्धा सहज हो जायेंगे। भले ही आप में किसी के प्रति मोह नहीं है लेकिन घृणा पैदा हो गयी तो जोश आ जायेगा। उस व्यक्ति को देखकर या याद करके उबाल आ जायेगा। शिव बाबा के बदले उस व्यक्ति की याद आती रहेगी। इससे कितना नुकसान हो गया। अगर उस व्यक्ति के बदले हमने शिवबाबा को याद किया होता तो हमारा भविष्य कितना ऊँचा बनता! कितनी बड़ी प्राप्ति होती! हमारे विकर्म विनाश होते।

जिसे स्थूल नेत्रों से नहीं देखना चाहते उसे मन की आँखों से क्यों देखते हो?

अगर आप उस व्यक्ति को दुष्ट कहते हो, खराब कहते हो तो उसको क्यों याद करते हो? जब आप उसको अच्छा ही नहीं समझते हो, तो बुरे को क्यों याद करते हो? उस व्यक्ति को इन स्थूल आँखों से देखना ही नहीं चाहते हो तो मन की आँखों से क्यों देखते हो? किसी को बुरा समझ कर उसको याद करना और शिव बाबा को भूलना – यह बहुत बड़ा पाप है, यह जन्म-जन्मातर के लिए शिव बाबा का वर्सा गँवाना है। बात भले ही छोटी-सी है लेकिन बहुत भारी है। जिस प्रकार एक कमरे में अथाह धन-सम्पत्ति रखी हुई हो, कीमती चीज़ें हों, करोड़ों नोटों की गड्डियाँ रखी हुई हों तथा कोई जलती हुई सिगरेट का टुकड़ा वहाँ फेंक दे और कमरे में आग लग जाए, तो कितना नुकसान हो जाता है! इसी प्रकार घृणा ऐसी चिंगारी है जो हमारे ज्ञान को भस्म कर देती है।

यज्ञ में रोज़ कुछ स्वाहा करो

भाई साहब कहते थे, बाबा ने यज्ञ रचा है, रोज़ इसमें कुछ स्वाहा करो। गली में भी आवाज़ लगाते हैं, दे दान, दे दान। कोई दाल, कोई सरसों का तेल दान करते हैं। आप सूक्ष्म दान करो। बाबा से प्रतिज्ञा करो, प्राण जाये पर वचन न जाये। महान आत्माओं, धर्मपिताओं की जीवन कहानी की डी.वी.डी. हम बहनों को दिखाते थे कि झूले में बच्चे के पाँव से उसका भविष्य दिखाई देता है और कहावत सुनाते थे, 'होनहार वीरवान के होत चिकने पात।' मुरली की क्लास के बाद कहते थे, आज पत्र-पुष्प में दादी प्रकाशमणि ने क्या-क्या समझाया, वह लिखो और मुरली का आधा पेज भी बिना देखे लिखो, अव्यक्त इशारे 5 लिख कर लाओ। हम नहीं लिख पाते थे। फिर हमें समझाते थे, इस ज्ञान में बुद्धि कैसी चाहिए – शुद्ध, निर्मल, पवित्र, स्वच्छ, एकाग्र, शान्त बुद्धि चाहिए। मुझे शक्तियों के बीच रहने का विशेष वरदान बापदादा से मिला हुआ है और मैं (शक्तिनगर में) रहता हूँ। मुझे गणेश, व्यास, संजय का टाइटल मिला हुआ है, आप भी बाबा से लो। हमसे पूछते थे, आपने (उस समय 15 समर्पित भाई-बहनों का स्टाफ शक्तिनगर में रहता था) किसको आदर्श बनाया हुआ है? अपने सामने किस बड़े को रखा है? रात्रि क्लास में एक-एक से पूछा कि आपके सामने कौन है बड़ा? किसी ने कहा, चन्द्रमणि दादी, प्रकाशमणि दादी, गुलजार दादी। मैंने कहा, आप। चक्रधारी दीदी ने कहा, मम्मा-बाबा। सुधा दीदी ने कहा, आप और गुलजार दादी। फिर सबकी 5-5 विशेषतायें पूछीं और कहा, इन्हें धारण करो और आगे बढ़ो।

न किचड़ा दें, न किचड़ा लें

भाई साहब कहते थे, सारी क्लास में अगर बांसुरी (मुरली) सबको एक-एक दी जाये तो भी सभी एक जैसी नहीं बजा सकेंगे, सभी का पार्ट अपना-अपना है इसलिए बाबा की तरह साक्षी होकर देखा करो। मुरली सुनो, नोट करो, मनन करो, मक्खन का गोला आपके हाथों में आ जायेगा। हम दैवी कुल के बच्चे न किचड़ा दें, न किचड़ा लें। हमारे से रूहानियत की खुशबू आनी चाहिये। जैसे बाबा सबसे बड़े प्यार से बोलते हैं, खुशी आ जाती है, हल्कापन आ जाता है, संकल्पों में दृढ़ता आ जाती है, ऐसी हमारी अवस्था होनी चाहिये। मम्मा जैसी स्थिति बनाओ। परम पवित्र शिव बाबा के रथ ब्रह्मा बाबा भी पवित्र आत्मा थे, कितना उनको नशा चढ़ा रहता था। बाबा की गोद में हम (जगदीश भाई) जाते थे। हमें भी नशा चढ़ जाता था कि हमें भी पवित्र देवी-देवता बनना है, खुशबूदार फूल बनना है। ब्रह्मा बाबा के पास ढेर बच्चे कैसे-कैसे पले हैं। ब्रह्मा बाबा के पास कितने समाचार आते थे। बाबा की स्थिति कभी खराब नहीं हुई। कभी किसी के प्रभाव में नहीं आये।

सबसे बड़ा रुपया नहीं, बाप है

भाई साहब कहते थे, बाबा 33 वर्ष में सम्पूर्ण बन गये और मम्मा भी, तो आपकी धारणायें क्या हैं? हर मास चार्ट बाबा को दो। क्रोध करना, रोब डालना यदि ये सब हैं तो फिर 84 जन्म कैसे लेंगे। अभी तो दुखों के पहाड़ गिरने हैं। क्यों, क्या, कैसे में नहीं जाओ। उड़ो, तपस्या से सफलता मिलेगी। सबसे बड़ा रुपया नहीं, बाप है। जब भी किसी नए सेवाकेन्द्र, उपसेवाकेन्द्र में बहनें रहने लगती थी तो अक्सर कहती थीं, सारा दिन क्या करें? तो भाई साहब समझाते थे, इमर्ज करो कि क्लासरूम भरा हुआ है (चाहे 2 ही बैठे हों) और मैं बाबा के महावाक्य सबको सुना रही हूँ। बाबा को बोलो, बाबा, यहाँ की सेवा बढ़ा दीजिये, मैं तैयार हूँ सेवा के लिये, थकूँगी नहीं। तो सचमुच नये भाई-बहनें आने लग जाते थे और बहनें व्यस्त हो जाती थीं।

इच्छाएँ नहीं रखो

भाई साहब कहते थे, यह आपका 84वाँ अन्तिम जन्म है, इच्छायें नहीं रखो। जैसे कोई मरने वाला मनुष्य हो वह यह नहीं कहेगा – आज मुझे गोलगप्पे खाने हैं, आज मुझे प्रगति मैदान में मेला देखने जाना है, आज अप्पूघर, आज सर्कस जाना है। इससे हम मन के गुलाम बन जाते हैं। हम भोगते नहीं वरन खुद भोगे जा रहे हैं। हमारी कर्मेन्द्रियाँ (दाँत, आँख, कान...) कमजोर होती जा रही हैं। क्या आपने रोज 8 घन्टे बाबा को दिये? सब नम्बरवार हैं परन्तु हमें नम्बरवन बनना है।

बाबा-बाबा करते रहो तो माया भाग जाएगी

भाई साहब कहते थे, भक्तिमार्ग में पंडित अथवा योगी मन्त्र देते हैं कि इसका जाप करो, इसकी गाँठ बाँध लो, तुम्हारी रक्षा होगी, तुम्हारे विघ्न टल जायेंगे। उन्होंने स्थूल ले लिया लेकिन यहाँ बाबा ने हमें मनमनाभव का मन्त्र दिया है। अगर हमारा मन परमात्मा से लगा रहेगा और हमारी याद निरन्तर रहेगी तो विघ्न आयेंगे नहीं। अगर आयेंगे तो भी बाबा ने इतना सहज साधन दिया है कि बाबा-बाबा करते रहो तो माया भाग जायेगी, विघ्न हट जायेंगे, यह बहुत आश्चर्य की बात है। माया पर जीत पाने के लिये कितने लोगों ने क्या-क्या नहीं किया होगा? आखिर उन्होंने यही कहा कि माया दुस्तर है, दुर्जेय है। भक्ति में कितने बड़े-बड़े भक्त होकर गये हैं, भक्तशिरोमणि में उनका नाम है परन्तु वे माया से परास्त हो चुके हैं। वे भगवान से कहते हैं कि हे प्रभु, हम आपकी शरण में आए हैं, हमें माया से विजय प्राप्त कराओ। लेकिन यहाँ बाबा कहते हैं कि कुछ नहीं करो, कुछ नहीं छोड़ो केवल दिल से, मन से बाबा-बाबा कहते रहो तो माया भाग जायेगी। ये विघ्न इतनी आसानी से निकलेंगे जैसे मक्खन से बाल। अगर शीशे में बाल आ जाये अथवा सुखे सीमेंट में बाल आ जाये अथवा पत्थर पर कोई लकीर आ जाये तो उसको समाप्त करना अथवा उसको निकालना बहुत मुश्किल है लेकिन मक्खन में बाल आये तो उसको निकालना बहुत सहज है। बाबा कहते हैं, बच्चे, बाबा-बाबा कहते रहो तो कोई भी विघ्न आसानी से हट जायेगा। इस बात का अनुभव सबको कोई-न-कोई रूप से हुआ होगा। आप अपने अनुभव के साथ किसी को यह ईश्वरीय ज्ञान सुनायेंगे तो उसे लगेगा कि यह ज्ञान ऊँचा है, श्रेष्ठ है, जीवन में धारण करने योग्य है और इससे अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति अवश्य होगी।

मन-बुद्धि को हल्का रखो

भाई साहब कहते थे, आत्मा के रूप और खुशबू पर माया ने चादर डाल दी है। आत्मा की शक्तियाँ छिप गई हैं, उन्हें जगाओ। योगी हल्के होते हैं। कभी सेवा के लिए ऊँची-ऊँची इमारतों में भी जाना होता था, कभी वहाँ की लिफ्ट खराब होती थी, सीढ़ियों से जाना पड़ता था तो समझाते थे कि ऊँचाइयों पर जाने वाले भारी सामान लेकर नहीं जाते। मन-बुद्धि को भारी नहीं, हल्का रखो। चप्पल फ्लैट पहनकर जाओ, पर्स में ज्यादा सामान नहीं रखना, भोजन हल्का करना, इस प्रकार मार्गदर्शन देते थे। ❖

व्यसनों के कारण...पृष्ठ 29 का शेष..

मनुष्य कभी दुख भुलाने का बहाना देकर और कभी खुशी मनाने का बहाना देकर शराब पीता है अर्थात् उसे न दुख भुलाना आता है और न ही खुशी मनाना। तब तो वह पशुओं से भी तुच्छ सिद्ध हुआ। कोई कहते हैं कि हम ये ज्यादा नहीं करते, बस कभी-कभी थोड़ा-सा। तो क्या कभी-कभी अपमानित होना या कभी-कभी नाली में गिर जाना ठीक है?

हम परमात्मा की संतान, चैतन्य, शांत स्वरूप, शक्ति स्वरूप, अजर, अमर आत्मा हैं। हम न तो तुच्छ हैं और न ही असहाय। हम हर समस्या को जीत सकते हैं। हमारे में अभूतपूर्व योग्यताएँ हैं जिन्हें पहचान कर रचनात्मकता और सृजनशीलता को बढ़ाने से जीवन में नए लक्ष्य निर्धारित होंगे, उमंग-उत्साह बढ़ेगा। फिर न तो खालीपन हमें नशे की ओर खींच सकता है और न ही परिस्थितियों का दबाव हमें नशे से हरा सकता है। कुसंग और कुतर्कों के लिए तो फिर स्थान ही कहाँ? राजयोग इस परिवर्तन के लिए सम्पूर्ण कारगर उपाय है। नज़दीकी ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर जाकर सहज राजयोग प्रशिक्षण अवश्य प्राप्त करें।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▶▶ E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125

1

2

3

4

5

6

7

1.चण्डीगढ़- 'राजयोग फॉर होलिस्टिक वेलनेस' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पंजाब के राज्यपाल महामहिम भ्राता वी.पी.सिंह बदनोर, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.शिवानी बहन, ब्र.कु.उत्तरा बहन तथा अन्य। **2.गोरखपुर-** उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के साथ ज्ञान-चर्चा करते हुए ब्र.कु.पारूल बहन। **3.करनाल (सेक्टर-7)-** 'कर्म और भाग्य' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहरलाल जी, ब्र.कु.शिवानी बहन, विधायक भ्राता हरविन्द्र कल्याण, मेयर बहन रेणुबाला गुप्ता, आई.जी.बहन सुमन मंजरी, विधायक भ्राता भगवानदास कबीरपंथी, ब्र.कु.प्रेम बहन तथा अन्य। **4.लखनऊ (गोमती नगर)-** उत्तर प्रदेश के नवनिर्वाचित उप-मुख्यमंत्री डॉ.दिनेश शर्मा का अभिनंदन करते हुए ब्र.कु.राधा बहन। साथ में ब्र.कु.मंजू बहन, ब्र.कु.राजीव रमन भाई तथा रविन्द्र भाई अग्रवाल। **5.काठमाण्डू (नेपाल)-** अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'विश्व परिवर्तन के लिए नारी सशक्तिकरण' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नेपाल के विदेश मन्त्री डॉ.प्रकाश शरण महत, उद्योगपति बहन लक्ष्मी शर्मा, सहसचिव भ्राता दामोदर रेग्मी, ब्र.कु.किरण बहन तथा अन्य। **6.गांधीनगर (उर्जानगर-1)** 'स्वास्थ्य, समृद्धि और खुशी का रहस्य' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गुजरात के शिक्षा मंत्री भ्राता भूपेन्द्र सिंह चुडासमा, डायनामिक ट्रेनर एन्ड काउन्सलर प्रो.ई.वी.गिरीश, ब्र.कु.तारा बहन तथा ब्र.कु.रंजन बहन। **7.भिलाई-** 'सकारात्मक परिवर्तन का स्तंभ नारी शक्ति' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पार्षद बहन ललिता रेड्डी, छ.ग.महिला आयोग अध्यक्षा बहन हर्षिता पाण्डे, छ.ग.बाल आयोग अध्यक्षा बहन शताब्दी पाण्डे, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.कमला बहन, ब्र.कु.चक्रधारी बहन तथा अन्य।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2015-2017 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2015-2017. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : May, 2017.

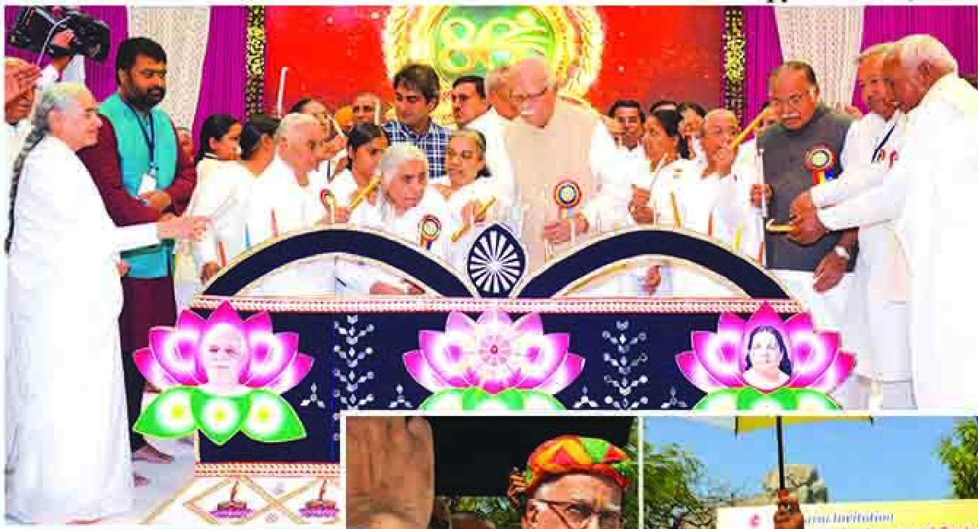

शान्तिवन (आबू रोड)- ब्रह्माकुमारीज़ की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भ्राता एल.के.आडवाणी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.जयन्ती बहन, राज्यसभा के उपसभापति भ्राता पी.जे.कुरियन, ब्र.कु.मुन्नी बहन तथा अन्य।

शान्तिवन (आबू रोड)- ब्रह्माकुमारीज की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में 100 फीट ऊँचे शिवध्वज को लहराते हुए भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भ्राता एल.के.आडवाणी जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, राजयोगिनी दादी रत्नमोहिनी जी, ब्र.कु.निर्वैर भाई तथा अन्य।

शान्तिवन (आबू रोड)- ब्रह्माकुमारीज की 80वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में पुडुचेरी की उपराज्यपाल महामहिम बहन किरण बेदी सम्बोधित करते हुए। मंचासीन हैं केन्द्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता राज्यमंत्री भ्राता रामदास बंडु आठवले, ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, ब.कु.बृजमोहन भाई, ब्र.कु.निर्वैर भाई तथा अन्य।

शान्तिवन (आबू रोड)- नॉर्थ उड़ीसा यूनिवर्सिटी, बारीपदा के उप-कुलपति प्रो.प्रफुल्लकुमार मिश्र, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी को डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (डी.लिट.) की उपाधि प्रदान करते हुए।